सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 02, अंक 225, नई दिल्ली । गुरुवार, 24 अक्टूबर 2024, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

जीवन हमेशा अपने सबसे अच्छे रूप में आने से पहले किसी संकट का इंतजार करता है।

03 महिलाओं को 1000 रुपये देने का वायदा तो पूरा किया नही...
06 प्रतिभाशाली बच्चे को समझना
08 चक्रवात श्दानाश् के कारण देश मे 221 ट्रेनें रद्द कर दी गई हैं

दिल्ली परिवहन विभाग द्वारा वाहन उठाने वाले बाउंसरों से बचें

कहीं वाहन के साथ आपके शरीर को भी ना पहुंच जाए नुकसान

जी हां, यह सूचना हर उस व्यक्ति से जुड़ी है है जिनके पास 10 साल पुरे हो चुके डीज़ल वाहन और 15 साल पूरे हो चुके सीएनजी/ पेट्रोल वाहन घर की बाउंड्री के अंदर या बाहर खड़े हैं।

वाहन मालिक को जबरन हटाते हुए बाउंसर

वाहन मालिक से हाथापाई करते हुए बाउंसर व कर्मचारी

वाहन को जबरन उठाकर ले जाते हुए....

संजय बाटला

नई दिल्ली। दिल्ली परिवहन विभाग के द्वारा उच्च न्यायालय के दिशा निर्देश पर जारी एसओपी मे आप अपने वाहनों को समय सीमा पूरी होने की बाद एक साल तक एनओसी लेकर वाहन दूसरे राज्य में भेज सकते है पर दिल्ली परिवहन विभाग द्वारा आपके वाहनों को उठवाकर अपने प्रिय बाहरी राज्यों में पंजीकृत वाहन स्क्रैप डीलरो को सुपुर्द करने का इतना शौक है की अपने द्वारा जारी एसओपी को भी दरकिनार कर घरों की सीमा में खड़े वाहनों को उठाने के लिए प्रवर्तन शाखा के अधिकारी के साथ बाउंसर नियुक्त कर दिए जिससे कोई भी और कहीं भी खड़ा वाहन उठा कर सुपुर्द करने में दिक्कत ना आए। **आज दिल्ली में एक वीडियो वायरल हो रहा है जिसमें परिवहन विभाग द्वारा एक वाहन को जबरदस्ती उठाकर ऐसे अपने प्रिय वाहन स्क्रैप डीलर को सुपुर्द किया गया जो सड़क परिवहन एवम् राजमार्ग मंत्रालय द्वारा ब्लैक लिस्टेड है और वाहन को सुपुर्द करने के अपने उद्देश्य को पूरा करने के लिए बॉक्सर का प्रयोग लिया। इस वीडियो के अंदर साफ दिखाई दे रहा है की कैसे बॉक्सर आ कर वाहन मालिक को गिरेबान से पकड़ कर वाहन से बाहर निकाल रहे हैं और दूसरा बॉक्सर उसे पीटने का रोल निभा रहा है और वाहन स्क्रैप डीलर वाहन को क्रेन में लटकाकर उठा कर चल देता है। इस वीडियो में कहीं भी प्रवर्तन शाखा का कोई अधिकारी नजर नहीं आ रहा मतलब आप समझ ही सकते है। इसके अलावा भी अनगिनत शिकायतें आ रही है जहा घर में कोई नहीं था वहा भी घर के अंदर से वाहन उठा कर अपने प्रिय वाहन स्क्रैप डीलरो को सुपुर्द किया गया और इनमें अधिकतर वह स्क्रैप डीलर है जिन्होने पिछले साल इसी परिवहन विभाग के द्वारा चालित वाहनों को उठाने की ड्राइव में जनता के वाहनों को उठाया ओर आज तक पैसा ना तो वाहन मालिकों को दिया और ना ही परिवहन विभाग में जमा कराया है। अब आप स्वयं समझ ले की परिवहन विभाग किस तरह से अपने प्रिय बाहरी राज्यों में पंजीकृत वाहन स्क्रैप डीलरो को आपके वाहन सुपुर्द करवाने में लगा हुआ है। अब इस साल प्रवर्तन शाखा अधिकारी के साथ में बॉक्सर भी लगा दिए जिससे आप या तो चुप चाप वाहन इन्हें सौंप दे या फिर अपनी जान को भी खोने के लिए रहे तैयार।** कितनी न्यायिक प्रक्रिया का प्रयोग कर रहा है परिवहन विभाग दिल्ली को प्रदूषण मुक्त करवाने के नाम से। आपके लिए कुछ फोटो बॉक्सर द्वारा की जा रही कार्यवाही के प्रस्तुत है।

हम पहले भी काई मुद्दों पर आपको अवगत करवा चुके है दिल्ली के परिवहन विभाग के आला अधिकारी द्वारा जो कार्य भी किया जाए वहीं न्यायिक है चाहे भारत देश के संविधान/ क़ानून में वह ग़ैर न्यायिक ही क्यों नहीं हो क्योंकि भारत देश के गृह मंत्री, दिल्ली के उपराज्यपाल, मुख्य सचिव या मुख्यमंत्री इसके प्रति देख कर भी सवाल नही करेंगे आखिर क्यों? क्योंकि कुल मिलाकर इस तरह राजस्व में तो पैसा आ रहा है जनता से बिना गिनती का।

आपकी जानकारी हेतु मुख्य

मूल रूप से, 1978 तक, संपत्ति का अधिकार भारत में मौलिक अधिकारों का एक हिस्सा था। हालाँकि, 1978 के 44वें संशोधन अधिनियम द्वारा, इसे मौलिक अधिकारों की श्रेणी से हटा दिया गया और भारतीय संविधान के अनुच्छेद 300A के तहत एक संवैधानिक अधिकार बना दिया गया। अब यह संवैधानिक अधिकार है।

अनुच्छेद 300ए में प्रावधान है कि "किसी भी व्यक्ति को कानून के अधिकार के बिना उसकी संपत्ति से वंचित नहीं किया जाएगा।" न्यायमूर्ति पीएस नरसिम्हा द्वारा लिखे गए फैसले में जोर दिया गया कि ये उप-अधिकार अनुच्छेद 300ए के तहत संपत्ति के अधिकार की वास्तविक सामग्री को चिह्नित करते हैं।

अब आप समझ सकते है की परिवहन आयुक्त प्रदूषण के नाम/ आड़ में जो जनता के साथ कर रहे हैं वह क़ानून की दृष्टि में न्यायिक है या गैर न्यायिक

दिल्ली में बढ़ते प्रदूषण को देखते हुए NDMC ने पार्किंग चार्ज बढ़ाया...

Enhanced Parking Fee for Stage – II of the GRAP:

S.No.	Type of Vehicle	Existing Parking Fee (in Rs. per hr.)	Enhanced Parking Fee for GRAP Period under Stage-II (in Rs. Per hr)
1.	Four-Wheeler/Car	20.00	40.00
2.	Two-Wheeler/Scooter	10.00	20.00
3.	Bus	150.00	300.00
4.	Car (Indoor)	10.00	20.00
5.	Scooter (Indoor)	5.00	10.00

Note: On street parking rates are already on higher side, therefore enhancement of parking rates will not be implemented on the On-Street & Monthly parking passes under GRAP stage-II, same as last year.

परिवहन विशेष न्यूज

दिल्ली में प्रदूषण का स्तर बढ़ता जा रहा है। प्रदूषण पर रोक लगाने के लिए प्राइवेट वाहनों के इस्तेमाल में कमी लाना एक अच्छा सॉल्यूशन माना जाता है। इसके लिए एनडीएमसी ने पार्किंग शुल्क दोगुनी कर दी है।

नई दिल्ली। दिल्ली में बढ़ते प्रदूषण से निपटने के लिए नई दिल्ली नगरपालिका परिषद ने एक अहम फैसला लिया है। लुटियंस दिल्ली क्षेत्र में पार्किंग शुल्क को दोगुना कर दिया गया है। इस फैसले के पीछे का खास मकसद लोगों को निजी वाहनों का कम इस्तेमाल करने के लिए प्रेरित करना और निजी वाहन की जगह पब्लिक ट्रांसपोर्ट के इस्तेमाल को बढ़ावा देना है।

एनडीएमसी की पार्किंग फीस में डबल बढ़ोत्तरी

एनडीएमसी ने ग्रेडेड रिस्पांस एक्शन प्लान (GRAP) के दूसरे स्टेप के निरस्त होने तक अपने पार्किंग के लिए शुल्क को दोगुना करने का आदेश दिया है। इस फैसले का मकसद क्लाइमेट कंडीशन को ध्यान में रखते हुए प्रदूषण के लेवल को कंट्रोल करना है। इसका मतलब है कि जिन क्षेत्रों में एनडीएमसी की पार्किंग व्यवस्था की गई है, वहां वाहन मालिकों को अधिक शुल्क देना होगा।

एनडीएमसी के एक सिनियर ऑफिसर के मुताबिक यह कदम लोगों को अपने निजी वाहनों का इस्तेमाल कम करने और पब्लिक ट्रांसपोर्ट का ऑप्शन चुनने के लिए प्रमोट करना है। इससे उम्मीद है कि प्रदूषण कम होगा और ट्रैफिक की भीड़ भाड़ में कमी आएगी।

मंथली पास होल्डर के लिए छूट

एनडीएमसी ने यह स्पष्ट किया है कि मंथली पास होल्डर के लिए पार्किंग फीस में कोई बढ़ोत्तरी लागू नहीं होगी, जबकि सड़क पर पार्किंग लगने वाली वाहनों के लिए फीस बढ़ाया जाएगा। हालांकि, सामान्य फीस के तहत चार पहिया वाहनों से 20 रुपये प्रति घंटा यानी एक दिन के लिए अधिकतम 100 रुपये और दो पहिया वाहनों से 10 रुपये प्रति घंटा लिया जाएगा। इस आदेश के लिए एनडीएमसी ने सख्त अनुपालन का निर्देश दिया है, ताकि प्रदूषण को कम करने के लिए प्रभावी कदम उठाए जा सकें।

दिल्ली नगर निगम में अभी तक नहीं बढ़ी है फीस

वाहन चालकों के लिए दिलचस्प बात यह है कि दिल्ली नगर निगम यानी MCD ने पार्किंग फीस में अब तक कोई बढ़ोतरी नहीं की है, जबकि बढ़ोत्तरी का प्रस्ताव सदन में मंजूरी के लिए लंबित है। मल्टीलेवल पार्किंग प्लेस में कारों के लिए चार घंटे तक का फीस 10 रुपये और दोपहिया वाहनों के लिए पांच रुपये है। MCD के एक अधिकारी ने बताया कि सदन ने फीस बढ़ाने के लिए मंजूरी नहीं दी है।

वर्तमान में पार्किंग फीस नीलामी पर आधारित है और इसी के मुताबिक फीस रेट में परिवर्तन किया जाता है। ऐसे समय पर फैसला आया है कि जब दिल्ली में हाल के दिनों में धुंध बढ़ गई है और वायु गुणवत्ता 'बहुत खराब' ग्रेड में पहुंच गई है। पिछले साल 21 अक्टूबर को जीआरपी-2 लागू होने के बाद पार्किंग फीस दोगुना कर दिया गया था, जिससे प्रदूषण नियंत्रण के तरीके को ध्यान में रखा गया था।

दिल्ली यातायात पुलिस व परिवहन विभाग द्वारा ट्रैफ़िक नियम उल्लंघन पर ए॰आई॰ का उपयोग: एक स्वागत योग्य कदम

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। हमारी ट्रांसपोर्ट एसोसिएशन को जानकारी मिली है कि दिल्ली यातायात पुलिस और परिवहन विभाग ट्रैफ़िक नियमों के उल्लंघन को नियंत्रित करने के लिए आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस (ए॰आई॰) तकनीक का उपयोग करने पर विचार कर रहे हैं। यह पहल हमारी दृष्टि में एक महत्वपूर्ण कदम है, जो यातायात प्रबंधन और सड़क सुरक्षा के क्षेत्र में सकारात्मक परिवर्तन लेकर आएगा।

1. भ्रष्टाचार पर रोक:
ए॰आई॰ की मदद से चालान और ट्रैफ़िक उल्लंघन की निगरानी पूरी तरह से स्वचालित हो जाएगी। इससे भ्रष्टाचार की संभावना कम हो जाएगी, क्योंकि निर्णय पूरी तरह से तकनीक पर आधारित होंगे, न कि अधिकारियों के विवेकाधीन।

2. अफ़सर राज में कमी:
ए॰आई॰ के उपयोग से अधिकारियों द्वारा मनमाने ढंग से निर्णय लेने की प्रवृत्ति में कमी आएगी और सटीक, निष्पक्ष और पारदर्शी कार्रवाई सुनिश्चित होगी।

3. सटीक कार्यवाही:
जो व्यक्ति ट्रैफ़िक नियमों का उल्लंघन करेगा, उसी पर कार्रवाई की जाएगी। हर उल्लंघन का डिजिटल प्रमाण उपलब्ध होगा, जिससे नागरिकों में विश्वास बढ़ेगा और गलतफहमी या गलत आरोपों की संभावना समाप्त होगी।

4. पुलिस बल का सही उपयोग:
इस तकनीक के आने से पुलिसकर्मियों को अन्य महत्वपूर्ण ड्यूटी पर लगाया जा सकेगा। सड़क पर पुलिस की अनावश्यक मौजूदगी से उत्पन्न होने वाली समस्याओं में कमी आएगी, और जन सुरक्षा के अन्य पहलुओं पर ध्यान केंद्रित किया जा सकेगा।

5. पुलिसकर्मियों की सेहत का ध्यान:
धूल, मिट्टी, धूप और ठंड में घंटों खड़े रहकर ड्यूटी करने से पुलिसकर्मियों की सेहत पर जो नकारात्मक प्रभाव पड़ता है, उसमें सुधार होगा। उनके कार्यदायित्वों को तकनीक द्वारा आंशिक रूप से संभाला जा सकेगा।

6. अनावश्यक ट्रैफ़िक जाम में कमी:
बेवजह की पुलिस जांच और पूछताछ के कारण उत्पन्न होने वाले ट्रैफ़िक जाम में कमी आएगी, जिससे यातायात सुचारू रहेगा और लोगों का समय बचेगा।

तकनीकी ख़ामियों का जोखिम: ए॰आई॰ तकनीक पूरी तरह सटीक नहीं हो सकती। कभी-कभी कैमरा एंगल, मौसम, या अन्य तकनीकी कारणों से गलत चालान जारी हो सकते हैं, जिससे निर्दोष लोग परेशानी में पड़ सकते हैं।

गोपनीयता और डेटा सुरक्षा: ए॰आई॰ आधारित निगरानी के दौरान नागरिकों की गोपनीयता को सुरक्षित रखना एक बड़ा मुद्दा होगा। यह सुनिश्चित करना आवश्यक होगा कि लोगों की निजी जानकारी का दुरुपयोग न हो और इसका उपयोग केवल कानूनी उद्देश्यों के लिए ही हो।

सार्वजनिक जागरूकता की कमी: ए॰आई॰ प्रणाली की कार्यप्रणाली के बारे में जनता में पर्याप्त जानकारी नहीं है। लोगों को यह समझने की आवश्यकता है कि यह प्रणाली कैसे काम करती है, ताकि वे अनजाने में इसके शिकार न बनें। जागरूकता अभियान की सख्त ज़रूरत होगी।

तकनीकी उपकरणों की उच्च लागत: ए॰आई॰ आधारित सिस्टम की स्थापना और रखरखाव की लागत अत्यधिक हो सकती है, जो सरकारी बजट पर अतिरिक्त दबाव डाल सकता है। यह सुनिश्चित करना ज़रूरी होगा कि इस तकनीक का आर्थिक रूप से सही तरीके से प्रबंधन हो सके।

हमारी एसोसिएशन इस कदम के समर्थन में है, और हमें विश्वास है कि यह पहल ट्रैफ़िक प्रबंधन को बेहतर बनाएगी। हालांकि, इन चुनौतियों का समाधान भी उतना ही आवश्यक होगा, ताकि इस तकनीक का लाभ पूर्ण रूप से समाज को मिल सके।

राजेंद्र कपूर
अध्यक्ष
ऑल इंडिया मोटर एवं गुड्स

गुवाहाटी में यातायात प्रबंधन के लिए समीक्षा और सुधार

परिवहन विशेष न्यूज

गुवाहाटी। न्यायालय में चुनौती को योग्यता मिलती है, तो वह ई-चालान प्रणाली की समीक्षा और सुधार कर सकता है। इसमें कानूनी मानकों के अनुपालन को सुनिश्चित करने और पहचानी गई किसी भी अनियमितता को दूर करने के लिए आवश्यक समायोजन करना शामिल हो सकता है। प्रवर्तन पर प्रभावः चुनौती यातायात नियमों के प्रवर्तन को भी प्रभावित कर सकती है। यदि ई-चालान प्रणाली गैर-अनुपालन वाली पाई जाती है, तो आवश्यक परिवर्तन लागू होने तक इसके उपयोग पर अस्थायी रोक लगाई जा सकती है।

जनता का विश्वासः कानूनी चुनौती यातायात प्रवर्तन प्रणालियों में जनता का विश्वास बनाए रखने के महत्व को रेखांकित करती है। यह सुनिश्चित करना कि ई-चालान प्रणाली पारदर्शी और निष्पक्ष रूप से संचालित हो, विश्वास और जवाबदेही को बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण है।

न्यायालय की चुनौती के जवाब में, यातायात पुलिस और संबंधित अधिकारी न्यायालय की चिंताओं को दूर करने के लिए कदम उठा सकते हैं। इसमें सिस्टम के कानूनी आवश्यकताओं के अनुपालन के बारे में विस्तृत स्पष्टीकरण देना और इसके संचालन में सुधार के लिए कोई भी आवश्यक समायोजन करना शामिल हो सकता है।

कानूनी विशेषज्ञ और वकालत समूह भी इस मामले पर बारीकी से नजर रख रहे हैं, क्योंकि इसका परिणाम यातायात प्रबंधन और कानून प्रवर्तन में प्रौद्योगिकी के उपयोग के लिए महत्वपूर्ण मिसाल कायम कर सकता है।

ट्रैफिक पुलिस द्वारा जारी ई-चालान प्रणाली को गुवाहाटी उच्च न्यायालय द्वारा चुनौती दिए जाने से इलेक्ट्रॉनिक ट्रैफिक प्रवर्तन की वैधता और प्रभावशीलता के बारे में महत्वपूर्ण प्रश्न उठते हैं। चूंकि न्यायालय नियमों और प्रक्रियाओं के साथ प्रणाली के अनुपालन की समीक्षा कर रहा है, इसलिए ट्रैफिक प्रबंधन में सुधार और सुधार की संभावना महत्वपूर्ण बनी हुई है। यह मामला कानून प्रवर्तन में तकनीकी समाधानों को प्रभावी और निष्पक्ष बनाने के लिए मजबूत कानूनी और प्रक्रियात्मक ढांचे की आवश्यकता पर प्रकाश डालता है।

महिलाओं की स्वास्थ्य ज़रूरतों को प्राथमिकता

भारत के उपराष्ट्रपति ने महिलाओं की स्वास्थ्य आवश्यकताओं को सर्वोच्च प्राथमिकता देने का आह्वान किया है, जो देश की आबादी का लगभग 50% हिस्सा हैं।

घर के अंदर और बाहर दोनों जगह कार्यवाहक (Caretakers) के रूप में काम करने के बावजूद महिलाएँ सबसे ज़्यादा उपेक्षित हैं।

महिलाओं के लिये प्रोत्साहक और निवारक स्वास्थ्य समान रूप से महत्त्वपूर्ण है और इन पर जोर दिया जाना चाहिये।

स्वास्थ्य हस्तक्षेपों (Health Interventions) द्वारा महिलाओं की स्वास्थ्य आवश्यकताओं को पूरा करने हेतु उन पर ध्यान केंद्रित करना चाहिये।

महिला और स्वास्थ्य

जन्म के समय लिंग अनुपात: UNFPA स्टेट ऑफ वर्ल्ड पॉपुलेशन 2020 ने भारत में जन्म के समय लिंगानुपात 910 होने का अनुमान लगाया है, जो सूचकांक के निचले स्तर पर है।

किशोरियों का स्वास्थ्य: किशोर उम्र में 70% लड़कियाँ एनीमिक होती हैं और उनकी मासिक धर्म और स्वच्छता से जुड़ी समस्याएँ अक्सर अनियंत्रित हो जाती हैं।

किशोर प्रजनन दर (AFR): संयुक्त राष्ट्र ने प्रति 1,000 महिलाओं पर 15-19 वर्ष की महिलाओं को जन्म की वार्षिक संख्या के रूप में किशोर प्रजनन दर (Adolescent Fertility Rate- AFR) को परिभाषित किया है।

राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण -5 के अनुसार, सर्वेक्षण किये गए 22 राज्यों में त्रिपुरा ने प्रति 1,000 महिलाओं पर 69 जन्म के साथ उच्चतम AFR दर्ज किया।

प्रति 1,000 महिलाओं पर 14 जन्म के साथ सबसे कम किशोर प्रजनन दर गोवा में दर्ज की गई।

किशोर गर्भावस्था: किशोर गर्भावस्था (Teenage Pregnancies) में लड़कियों की मृत्यु की संभावना 3 गुना अधिक होती है। महिलाओं की प्रजनन और यौन स्वास्थ्य संबंधी ज़रूरतों को अक्सर नज़रअंदाज कर दिया जाता है।

भारत में प्रतिवर्ष लगभग 113 किशोर महिलाएँ गर्भधारण के कारण परिवादों (libels) के परिणामस्वरूप अपनी जान गवाँ देती हैं। इसके अलावा ऐसी मौतों की कम रिपोर्टिंग भी होती है।

प्रजनन स्वास्थ्य का मुद्दा: भारत की 70% महिलाएँ प्रजनन के दौरान कई (Reproductive Tract) प्रकार के संक्रमण से पीड़ित होती हैं, जिससे बाँझपन, गर्भपात और इसी तरह की समस्याएँ हो सकती हैं जिन्हें सामान्य माना जाता है।

मातृ मृत्यु दर: मातृ मृत्यु दर (Maternal Mortality Ratio- MMR) को एक निश्चित समय अवधि के दौरान मातृ मृत्यु की संख्या के रूप में परिभाषित किया जाता है, जो एक ही समय अवधि के दौरान 1,00,000 जीवित जन्मों में होती है।

MMR वर्ष 2015-17 के 122 और वर्ष 2014-2016 के 130 के स्तर से घटकर वर्ष 2016-18 में 113 रह गई है।

महामारी के बीच महिलाएँ: जो महिलाएँ महामारी के दौरान फ्रंटलाइन वर्कर्स के रूप में काम कर रही हैं, उनमें से कई की PPE किट जैसी साधारण ज़रूरतों तक पहुँच नहीं है, जो उन्हें संक्रमण के प्रति अधिक संवेदनशील बनाता है।

महिलाएँ, फ्रंटलाइन कार्यकर्त्ताओं के अलावा जो संक्रमित हो जाते हैं, उन्हें भी दोहरी परेशानी का सामना करना पड़ता है क्योंकि माना जाता है कि उन्हें न केवल खुद की देखभाल करनी है बल्कि परिवार के अन्य सदस्यों की भी देखभाल करनी होती है जो संक्रमित हैं।

यहाँ तक कि कोविड-19 से पीड़ित महिलाएँ जो अस्पताल में भर्ती हैं, उनके प्रवेश के दिनों की औसत संख्या उनके पुरुष समकक्षों की तुलना में बहुत कम है।

स्कूल छोड़ने वालों में भी अधिकांश लड़कियाँ हैं।

महिलाओं की स्वास्थ्य सुविधाएँ सुनिश्चित करने की सरकारी पहल

स्वास्थ्य और कल्याण केंद्र: भारत में लगभग 76,000 स्वास्थ्य और कल्याण केंद्र हैं जो उच्च रक्तचाप, मधुमेह, स्तन कैंसर, मुख का कैंसर और ग्रीवा कैंसर जैसे 5 प्रकार के स्वास्थ्य मुद्दों की स्क्रीनिंग करते हैं।

इन स्वास्थ्य केंद्रों में प्रतिवर्ष आने वाले मरीजों की संख्या लगभग 46.4 करोड़ है। इनमें से 24.91 करोड़ यानी 53.7% महिलाएँ हैं।

किशोर हितैषी स्वास्थ्य सेवा कार्यक्रम: राष्ट्रीय किशोर स्वास्थ्य कार्यक्रम (Rashtriya Kishor Swasthya Karyakram) पोषण, यौन प्रजनन स्वास्थ्य, पदार्थों का दुरुपयोग, गैर-संचारी रोग, मानसिक स्वास्थ्य, चोट और हिंसा पर ध्यान केंद्रित करता है।

यह कार्यक्रम लेस्बियन (LESBIAN), गे (GAY), बाईसेक्सुअल (BISEXUAL), ट्रांसजेंडर (TRANSGENDER) और क्यूर (Queer) सहित सभी किशोरों तक पहुँचने पर ध्यान केंद्रित करता है।

सहायक नर्स मिडवाइफ: सहायक नर्स मिडवाइफ (Auxiliary Nurse Midwife- ANM) जिसे आमतौर पर ANM के रूप में जाना जाता है, भारत में ग्रामीण स्तर की महिला स्वास्थ्य कार्यकर्ता है, जिसे समुदाय और स्वास्थ्य सेवाओं के बीच पहले संपर्क व्यक्ति के रूप में जाना जाता है।

जननी सुरक्षा योजना (JSY): जननी सुरक्षा योजना (Janani Suraksha Yojana- JSY) माताओं और नवजात शिशुओं की मृत्यु दर को कम करने के लिये भारत सरकार के राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन (National Health Mission-NHM) द्वारा चलाया जा रहा एक सुरक्षित मातृत्व हस्तक्षेप (Safe Motherhood Intervention) है।

इसे 12 अप्रैल, 2005 को लॉन्च किया गया था और इसे सभी राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों में कम प्रदर्शन करने वाले राज्यों पर विशेष फोकस के साथ लागू किया जा रहा है।

JSY एक 100% केंद्र प्रायोजित योजना है और प्रसव एवं प्रसव उपरांत देखभाल हेतु नकद सहायता प्रदान करती है।

प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना (PMMVY): PMMVY गर्भवती महिलाओं और स्तनपान कराने वाली माताओं के लिये एक योजना है।

इस योजना ने 1 करोड़ लाभार्थियों का आँकड़ा पार कर लिया है।

यह एक प्रत्यक्ष लाभ अंतरण (Direct Benefit Transfer- DBT) योजना है जिसके तहत गर्भवती महिलाओं को सीधे उनके बैंक खाते में नकद राशि प्रदान की जाती है ताकि बढ़ी हुई पोषण संबंधी ज़रूरतों को पूरा किया जा सके और आंशिक रूप से मज़दूरी के नुकसान की भरपाई की जा सके।

आगे की राह

बहु-क्षेत्रीय दृष्टिकोण: महिलाओं के अच्छे स्वास्थ्य को सुनिश्चित करने के लिये बहु-क्षेत्रीय स्तर जैसे- बाल विवाह के उन्मूलन, गर्भ निरोधकों तक पहुँच और सभी स्तरों पर स्वास्थ्य सुविधाओं के लिये समान व्यवहार किया जाना चाहिये।

निस्संदेह मातृ स्वास्थ्य देखभाल महत्त्वपूर्ण है, अतः महिलाओं के पूरे जीवन काल में उनके स्वास्थ्य देखभाल पर सबसे अधिक ध्यान दिया जाना चाहिये।

बेहतर स्वास्थ्य को बढ़ावा देना, नियमित जाँच और निवारक देखभाल ऐसे क्षेत्र हैं जिन पर ध्यान देने की आवश्यकता है।

स्वास्थ्य देखभाल सुविधाओं की आवश्यकता:

अपने स्वास्थ्य को प्राथमिकता देने के लिये स्वयं महिलाएँ अपनी तरफ से अनिच्छुक होती हैं।

यदि महिलाएँ अपने घरों के पास उपलब्ध स्वास्थ्य सुविधाओं का उपयोग करें तो वे अपनी कई भूमिकाओं के कारण अपने लिये समय निकाल सकती हैं।

संयुक्त प्रयासः सशक्तीकरण हेतु महिलाओं को भी अपने स्वास्थ्य को प्राथमिकता देनी चाहिये और उन सुविधाओं से अवगत होना चाहिये जो सरकार द्वारा उन्हें प्रदान की जा रही हैं।

गर्भवती महिलाओं के लिये नियमित जाँच अनिवार्य है और इसके माध्यम से उनके एनीमिया का ध्यान रखा जाना चाहिये तथा सुरक्षित परिस्थितियों में प्रसव सुनिश्चित करना चाहिये।

साथ ही समाज में पुरुषों की मानसिकता को बदलना होगा और उन्हें शिक्षित भी होना चाहिये।

महिलाओं के लिये और आखिरकार सभी के लिये अच्छे स्वास्थ्य को बढ़ावा देने हेतु शिक्षा बहुत महत्त्वपूर्ण है।

निष्कर्ष

एक स्वस्थ समाज का निर्माण तब तक नहीं किया जा सकता है जब तक कि महिलाओं की स्वास्थ्य आवश्यकताओं की उपेक्षा की जाती रहेगी क्योंकि वे एक स्वस्थ समाज की आधारशिला हैं।

महिलाओं का अच्छा स्वास्थ्य सुनिश्चित कराना केवल व्यक्तिगत नहीं बल्कि राष्ट्रीय प्राथमिकता है। भारत और इसकी अर्थव्यवस्था को एक स्वस्थ महिला कार्यबल की आवश्यकता है क्योंकि महिलाओं की श्रम शक्ति में 10 प्रतिशत की वृद्धि से वर्ष 2025 तक भारत की GDP में लगभग 700 बिलियन डॉलर की वृद्धि की जा सकती है।

कैल्शियम की कमी से कम उम्र में ही घेर लेगी हड्डियों की बीमारी, कमी दूर करने के लिए महिलाएं जरूर खाएं ये 5 फूड

बढ़ती उम्र में हड्डियों से संबंधित कई समस्याएं घेरने लगती हैं. अक्सर महिलाएं अपने खानपान का ध्यान नहीं रखती हैं, जिससे उन्हें 30-40 की उम्र में ही बोन संबंधित प्रॉब्लम होने लगती हैं. ये परेशानी और अधिक ना बढ़े, इसके लिए जरूरी है कि आप अभी से ही कैल्शियम से भरपूर फूड्स का सेवन शुरू कर दें. यहां 5 कैल्शियम रिच फूड्स के बारे में बता रहे हैं, इन्हें आप जरूर खाएं.

उम्र बढ़ने के साथ शरीर के अंग धीरे-धीरे कमजोर होने लगते हैं. हड्डियों के साथ भी ऐसा ही है. यदि आप कम उम्र हेल्दी और पौष्टिक से भरपूर फूड्स का सेवन नहीं करेंगी तो आगे चलकर कई शारीरिक समस्याएं हो सकती हैं. सबसे ज्यादा लोगों को हड्डियों की समस्या परेशान करने लगती है. खासकर महिलाएं 30 से 40 की उम्र में ही शरीर में कैल्शियम और विटामिन डी की कमी के कारण परेशान रहती हैं. ऐसा इसलिए होता है, क्योंकि उनकी डाइट में कैल्शियम रिच फूड्स की कमी होती है. आप नहीं चाहती हैं कि बढ़ती उम्र में आपको गठिया, ऑस्टियोपोरोसिस, जोड़ों में दर्द, बोन फ्रैक्चर की समस्या हो तो आप यहां बताए गए कैल्शियम से भरपूर चीजों को डाइट में आज से ही शामिल करें.

कैल्शिमय की जरूरत शरीर को क्यों होती है?

हेल्थ डॉट कॉम में छपी एक खबर के अनुसार, कैल्शियम शरीर में सबसे प्रचुर मात्रा में पाया जाने वाला मिनरल है. ये एक ऐसा पोषक तत्व है, जो आपकी हड्डियों और दांतों को मजबूत बनाए रखने में मदद करता है. मांसपेशियों को शक्ति प्रदान करता है. नर्व और हार्मोन फंक्शन को सपोर्ट करता है. कैल्शियम को शरीर स्वाभाविक रूप से प्रोड्यूस नहीं करता है, इसलिए, हड्डियों को मजबूती देने और बेहतर हेल्थ के लिए डाइट में पर्याप्त मात्रा में कैल्शियम से भरपूर फूड्स को शामिल करना महत्वपूर्ण है. आपके शरीर में 99% से अधिक कैल्शियम हड्डियों और दांतों में पाया जाता है.

कितना हो एक दिन में कैल्शियम का इनटेक

अमेरिका के फूड एंड ड्रग एडमिनिस्ट्रेशन (2016 तक) के अनुसार, 4 से लेकर उससे अधिक उम्र वालों के लिए कैल्शियम का अनुशंसित डेली वैल्यू 1,300 मिलीग्राम निर्धारित किया है. हालांकि, कैल्शियम की जरूरत व्यक्ति की उम्र, लिंग पर आधारित होती है. फूड एंड न्यूट्रिशन बोर्ड के अनुसार कैल्शियम के लिए अनुशंसित डायटरी अलाउएंसेज (RDAs) अलग-अलग हैं. 14 से 18 वर्ष के टींस को 1300 एमजी डेली कैल्शियम इनटेक जरूरी है. वहीं 19 से 50 वर्ष के लोगों के लिए 1000 एमजी. 51 से 70 वर्ष के पुरुषों को 1 हजार एमजी तो इसी उम्र की महिलाओं को 1200 एमजी कैल्शियम का डेली इनटेक जरूरी है.

कैल्शियम की पूर्ति के लिए महिलाएं खाएं ये फूड्स

खसखस- महिलाओं को कैल्शियम की पूर्ति के लिए दूध, दही के अलावा, खसखस को अपनी डाइट में जरूर शामिल करना चाहिए. खसखस आयरन, कैल्शियम, गुड फैट का बेहतरीन सोर्स है. हालांकि, इसकी तासीर गर्म होती है, इसलिए इसका सेवन आप सीमित मात्रा में ही करें. कैल्शियम रिच खसखस के नियमित सेवन से आप अपनी हड्डियों को बीमारियों से बचा सकती हैं.

दूध और डेयरी प्रोडक्ट्स- अक्सर महिलाएं घर के कामों में लगी रहती हैं और अपने खानपान पर ध्यान कम देती हैं. कुछ महिलाएं तो डेली दूध, दही का सेवन भी नहीं करती हैं. कैल्शियम की पूर्ति के लिए दूध और इससे बनी चीजें आप डेली खाएं. तभी बढ़ती उम्र में बोन रिलेटेड समस्याओं से बची रहेंगी. डेयरी प्रोडक्ट्स अन्य फूड्स की तुलना में कैल्शियम में सबसे अधिक भरपूर होते हैं. इसके लिए आप चीज की भी सेवन कर सकती हैं.

चिया सीड्स- ये बीज ओमेगा-3 फैटी एसिड, फाइबर और कैल्शियम से भरपूर होते हैं. इसे आप दही, स्मूदी, दूध या फिर पानी में डालकर भी पी सकती हैं. कैल्शियम का बेहतरीन सोर्स हैं चिया के बीज. प्रत्येक 100 ग्राम सर्विंग में लगभग 400 से लेकर 600 एमजी कैल्शियम की पूर्ति होगी.

हरी पत्तेदार सब्जियां- सब्जियां सेहत का खजाना होती हैं. खासकर, हरी पत्तेदार सब्जियों के सेवन से आपको भरपूर पोषण मिलेगा. इनमें विटामिन ए, सी, ई, के, आयरन, फाइबर के साथ ही कैल्शियम भी होता है. आप पालक, केल का सेवन जरूर करें. पत्तेदार सब्जियों के सेवन से महिलाओं के शरीर में आयरन की कमी भी नहीं होगी. पालक खाने से आपको कैल्शियम, आयरन के साथ ही विटामिन ए, सी भी मिलेगा. केल का सेवन आप सलाद या किसी भी ड्रिंक में ब्लेंड करके कर सकती हैं.

नट्स और सीड्स- कुछ नट्स में कैल्शियम काफी अधिक होता है. बादाम, तिल, अलसी के बीज खाएं. इनसे आपको कैल्शियम, एंटीऑक्सीडेंट्स, विटामिन के, कई तरह के मिनरल्स, फाइबर, ओमेगा-3 फैटी एसिड्स की प्राप्ति होगी. एंटीऑक्सीडेंट्स शरीर में फ्री रेडिकल्स के कारण कोशिकाओं को होने वाली नुकसान से बचाते हैं. कैल्शियम के लिए आप बादाम का सेवन भी कर सकती हैं.

अक्षरधाम मंदिर के पास बना है अवैध पिकअप प्वाइंट, बस चालकों के आगे बेबस पुलिस

सुषमा रानी

दिल्ली स्थित अधरधाम मंदिर के नजदीक अवैध पिकअप प्वाइंट बनने के कारण दिल्ली पुलिस के लिए कड़ी चुनौती है। रात के वक्त यात्री फ्लाईओवर व सड़कों पर खड़े होकर बसों का इंतजार करते हैं। इसी का फायदा उठाकर बदमाश उन्हें अपना शिकार बनाते हैं। बस चालकों के आगे पुलिस बेबस नजर आती है। त्योहारी सीजन को देखते यहां पर फिलहाल भीड़ देखी जाती है।

पूर्वी दिल्ली। अधरधाम मंदिर के आसपास डग्गामार बस चालक और ट्रेवल एजेंसियों ने अवैध रूप से पिकअप प्वाइंट बनाए हुए हैं। दिल्ली पुलिस (Delhi Police) एक साल से यह प्वाइंट खत्म करने में लगी हुई है, लेकिन बस चालकों की मनमानी के आगे दिल्ली पुलिस बेबस नजर आती है।

पिछले साल दिवाली (Diwali 2024) के मौके पर मंडावली थाना ने प्वाइंट को खत्म करने के लिए मंदिर के पास सड़क पर समानंतर बैरिकेड लगाए गए थे। यह बैरिकेड अभी भी लगे हैं, लेकिन यह जिस उद्देश्य के लिए लगाए गए थे वह पूरा नहीं हो रहा है।

दिवाली में चंद दिन रह गए हैं। ऐसे में लोग दिल्ली से दूसरे राज्य अपने घर जा रहे हैं। अक्षरधाम फ्लाईओवर व इसके आसपास की सड़कों पर रात में जगह-जगह यात्रियों को जमावड़ा देखने को मिल रहा है। साइकिल पर लोग खाने पीने का सामान बेच रहे हैं।

दिन की बजाय रात में दिखती है बसें

फ्लाईओवर को डग्गामार बस चालकों ने मुख्य प्वाइंट बनाया हुआ था, लेकिन अब पांडव नगर एनएच-नौ का नया प्वाइंट बना लिया है। गौर करने वाली बात यह है कि दिन में यहां बसे नजर नहीं आती हैं, लेकिन शाम होते ही सड़कों व फ्लाईओवर पर बिहार, प्रयागराज, मध्य प्रदेश समेत कई जगह के लिए बसे यात्रियों के लिए आकर खड़ी हो जाती हैं।

पुलिस सख्ती कर रही है तो अक्षरधाम फ्लाईओवर (Akshardham flyover) से आगे जाकर मयूर विहार में सड़क किनारे खड़े होकर यात्री बसों का इंतजार कर रहे हैं। आरोप है ट्रांसपोर्ट विभाग, पुलिस, प्रशासन के कई अधिकारियों की मिलीभगत के के कारण अवैध प्वाइंट पर लगाम नहीं लग पा रही है।

बसों के ऐप पर पिकअप प्वाइंट है अक्षरधाम

रेड बस समेत कई ट्रेवल एजेंसियों के मोबाइल ऐप पर अक्षरधाम पिकअप प्वाइंट है। रात के वक्त यात्री बसों का इंतजार करते हैं। सड़क सुनसान होने की वजह बदमाश उन लोगों को अपना निशाना बनाते हैं। आरोप है कि ट्रेवल एजेंसी वाले मेट्रो के पिलर नंबर 36 के पास उन्हें बुलाते हैं।

जब वह वहां आकर खड़े हो जाते हैं तो फोन करके उनसे कहते हैं यहां बस नहीं रूकेगी फ्लाईओवर पार करके मयूर विहार आ जाओ। ऐसे में यात्रियों को परेशानी उठानी पड़ती है। महिला यात्रियों के लिए भी यह अवैध प्वाइंट खतरनाक है।

मैंने कुछ ही दिन पहले कार्यभार संभाला है। मुझे इस मामले की जानकारी नहीं है। वहां अगर इस तरह की समस्या है तो उसका समाधान किया जाएगा।

राजीव रावल, जिला पुलिस उपायुक्त पूर्वी रेंज।

दिल्ली में हाईटेंशन पोल पर चढ़ा शख्स, PM मोदी, सीएम और चीफ जस्टिस से बातचीत कराने की करने लगा जिद्

दिल्ली के गीता कॉलोनी थाना क्षेत्र के अंतर्गत यमुना खादर क्षेत्र में एक अज्ञात व्यक्ति एक हाई-वोल्टेज बिजली के खंभे पर चढ़ गया है। उसे सुरक्षित नीचे उतारने के लिए पुलिस और फायर ब्रिगेड के जवान को कड़ी मशक्कत करनी पड़ी। हाईटेंशन पोल पर चढ़ा व्यक्ति पीएम नरेंद्र मोदी सीएम आतिशी और मुख्य न्यायाधीश से बातचीत की मांग करने लगा।

नई दिल्ली। दिल्ली में एक चौंकाने वाली घटना में बुधवार को यमुना खादर इलाके में एक व्यक्ति हाई-टेंशन वोल्टेज बिजली के खंभे पर चढ़ गया। घटना की सूचना गीता कॉलोनी थाने को दी गई। सूचना मिलने पर पुलिस तुरंत मौके पर पहुंची।

पुलिस और दिल्ली अग्निशमन सेवा के कर्मियों ने उस व्यक्ति को सुरक्षित नीचे उतार लिया। दिल्ली फायर सर्विस के एडीओ यशवंत सिंह मीना के मुताबिक, वह शख्स मुख्य न्यायाधीश, मुख्यमंत्री और प्रधानमंत्री से बात करने पर अड़ा था।

अधिकारी मीना ने बातचीत में कहा

"सुबह 10:30 बजे, हमें एक व्यक्ति के बारे में फोन आया जो हाई-टेंशन तार के खंभे पर चढ़ गया था। वह पर्यावरण संरक्षण के संबंध में प्रधान मंत्री, मुख्यमंत्री और मुख्य न्यायाधीश से बात करने की मांग कर रहा था। यह स्पष्ट नहीं है कि कहाँ है वह वहीं से हैं, क्योंकि वह विरोधाभासी जानकारी दे रहे हैं।"

उन्होंने कहा कि उस व्यक्ति ने बंगाल या बिहार से होने का उल्लेख किया और शिक्षक के रूप में काम करने का दावा किया। फिलहाल मामले की जांच जारी है।

पुलिस को नहीं मिला कोई सुसाइड नोट

आईआईटी दिल्ली (IIT Delhi) स्थित अरावली हॉस्टल (Aravali Hostel) में मंगलवार देर रात एमएससी द्वितीय वर्ष के छात्र ने आत्महत्या करके अपनी जान दे दी। मौके से पुलिस को कोई सुसाइड नोट बरामद नहीं मिला। छात्र के कमरे से मिले मेडिकल रिपोर्ट से उसके मनोरोग से ग्रसित होने की बात कही गई।

पुलिस उसके दोस्तों के बयान दर्ज मामले की जांच कर रही है। घटना के बाद झारखंड में परिवार को सूचित किया गया। पुलिस ने घटना को लेकर जानकारी देते हुए कहा कि देर रात आईआईटी दिल्ली के एक हॉस्टल में छात्र के खुदकुशी की सूचना मिली। इस पर पुलिस कमरा नंबर डी-57 पहुंची। दरवाजा अंदर से बंद था। स्टाफ व छात्रों ने खिड़की का शीशा तोड़कर अंदर प्रवेश किया।

भाजपा शासित हरियाणा द्वारा छोड़े जा रहे उद्योगों के प्रदूषित पानी से यमुना में अमोनिया का स्तर बढ़ा-सीएम आतिशी

सुषमा रानी

नईदिल्ली। नई दिल्ली हरियाणा से छोड़े जा रहे उद्योगों के प्रदूषित पानी से वजीराबाद रिजर्वायर पर पानी का अमोनिया का स्तर काफ़ी ज़्यादा बढ़ गया है। इससे वज़ीराबाद वाटर ट्रीटमेंट प्लांट, सोनिया विहार वाटर ट्रीटमेंट प्लांट और भागीरथी वाटर ट्रीटमेंट प्लांट के उत्पादन पर असर पड़ा है।

बुधवार की मुख्यमंत्री आतिशी ने यहाँ निरीक्षण कर स्थिति का जायज़ा लिया। इस मौक़े पर सीएम आतिशी के कहा कि, भाजपा ने गंदी राजनीति करते हुए पहले दिल्ली की हवा प्रदूषित किया और अब पानी को भी जहरीला बना रही है। उन्होंने कहा कि, भाजपा शासित हरियाणा द्वारा छोड़े जा रहे उद्योगों के प्रदूषित पानी से यमुना में अमोनिया का स्तर बढ़ा है।

सीएम आतिशी ने कहा कि, भाजपा शासित हरियाणा-उत्तर प्रदेश में पराली जलाने की घटनाएं बढ़ी है; पराली की दमघोंटू हवा से दिल्ली में वायु प्रदूषण बढ़ रहा है। उन्होंने कहा कि,भाजपा, दिल्लीवालों को मारने की कोशिश कर रही है; ₹आप₹ और अरविंद केजरीवाल दिल्लीवालों को बचाने का प्रयास कर रहे है।

सीएम आतिशी ने कहा कि, भाजपा जितनी गंदी राजनीति करे लेकिन अरविंद केजरीवाल जी के मार्गदर्शन में ₹आप₹ सरकार दिल्लीवालों की भाजपा के हर षड्यंत्र से रक्षा करेगी।

निरीक्षण के बाद मीडिया से साझा करते हुए मुख्यमंत्री आतिशी ने कहा कि, पिछले कुछ दिनों से दिल्ली में चाहे यमुना में प्रदूषण का स्तर हो या हवा में प्रदूषण और एक्यूआई का स्तर बढ़ना हो इसकी वजह भाजपा की गंदी राजनीति है। दिल्ली में यमुना में प्रदूषण इसलिए हो रहा है क्योंकि हरियाणा और उत्तर-प्रदेश अपना अनट्रीटेड इंडसट्रियल वेस्ट यमुना में भेज रहे है, वज़ीराबाद बैराज पर भेज रहे है, कालिंदी कुंज बैराज पर भेज रहे है।

सीएम आतिशी ने कहा कि, इस कारण कल से वज़ीराबाद बैराज पर यमुना में जो पानी भेजा जा रहा है, उसमें अमोनिया का स्तर काफ़ी बढ़ गया है। कल शाम तक यहं अमोनिया का स्तर 3 पीपीएम पर पहुँच गया। अमोनिया के इस स्तर पर पहुंचने के कारण वाटर ट्रीटमेंट प्लांट पर पानी ट्रीट नहीं किया जा सकता है।

उन्होंने कहा कि, हरियाणा द्वारा डीडी-2 और डीडी-8 ड्रेन से यमुना में भेजे जा रहे प्रदूषित पानी के कारण आज वज़ीराबाद वाटर ट्रीटमेंट प्लांट, सोनिया विहार वाटर ट्रीटमेंट प्लांट और भागीरथी वाटर ट्रीटमेंट प्लांट सभी में पानी का उत्पादन प्रभावित हुआ है और दिल्ली के लोगों तक पानी नहीं पहुंच रहा है।

उन्होंने कहा कि, ये बिल्कुल साफ़ है कि, भाजपा दिल्लीवालों से इतनी नफ़रत करती है कि, वो हरियाणा और उत्तर-प्रदेश की अपनी सरकारों दिल्लीवालों के ख़िलाफ़ एक हथियार की तरह इस्तेमाल कर रही है

सीएम आतिशी ने कहा कि, कालिंदी कुंज पर भी भाजपा जहरीला पानी भेज रही है, हम उसे साफ़ कर रहे है। भाजपा हरियाणा-उत्तर प्रदेश में पराली जला रही है लेकिन हम हर संभव कदम उठाकर दिल्ली का प्रदूषण कम कर रहे है।

सीएम आतिशी ने अपने एक्स(ट्विटर) हैंडल से पोस्ट करते हुए कहा कि, भाजपा दिल्लीवालों से इतनी नफ़रत करने लगी है कि ₹हरियाणा और उत्तर-प्रदेश की अपनी सरकारों को दिल्ली के ख़िलाफ़ हथियार की तरह इस्तेमाल करने लगी है। इसका उदाहरण है कि, हरियाणा से छोड़े जा रहे प्रदूषित औद्योगिक वेस्ट के कारण यमुना में अमोनिया का स्तर बहुत ज़्यादा बढ़ गया है। इससे पानी का उत्पादन प्रभावित हुआ है। साथ ही कालिंदी कुंज बैराज पर हरियाणा-उत्तर प्रदेश के उद्योगों से आ रहा जहरीला पानी यमुना को प्रदूषित कर रहा है, इससे नदी में झाग बन रहा है।

दूसरी तरफ़ भाजपा शासित इन दोनों राज्यों में पराली जलाने की घटनाएं बढ़ी है और पराली की दमघोंटू हवा से दिल्ली में वायु प्रदूषण बढ़ रहा है। लेकिन भाजपा जान ले- मारने वाले से बड़ा बचाने वाला होता है। ये चाहे जितनी गंदी राजनीति करें लेकिन अरविंद केजरीवाल जी के मार्गदर्शन में ₹आप₹ सरकार दिल्लीवालों की भाजपा के हर षड्यंत्र से रक्षा करेगी।

जानलेवा प्रदूषण की जिम्मेदारी लेते आतिशी तुरंत प्रभाव से मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा दे- देवेन्द्र यादव

सुषमा रानी

नईदिल्ली, दिल्ली प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष देवेन्द्र यादव ने कहा कि दिल्ली की मुख्यमंत्री आतिशी राजधानी में दमघोटू प्रदूषण को नियंत्रित करने के लिए कोई ठोस कदम उठाने की बजाय आरोप प्रत्यारोप की बयानबाजी करके वायु प्रदूषण के लिए सरकारी तंत्र को पूरी तरह असहाय बता रही हैं और प्रदूषित जल के लिए मुख्यमंत्री कह रही है कि वजीराबाद बैराज में आने वाले पानी में अमोनिया का स्तर अधिक है कि उसे ट्रीट नही किया जा सकता। यादव ने कहा कि यह चिंताजनक है कि आतिशी दिल्ली की मुख्यमंत्री होने के बावजूद वायु और जल प्रदूषण को नियंत्रित करने में असमर्थता दिखाना उनकी नाकामी को दर्शाता है, उन्हें तुरंत अपने पद से इस्तीफा देना चाहिए।

आज जहांगीरपुरी में अत्यंत खतरनाक 417 एक्यूआई दर्ज हुआ, जबकि वजीरपुर में 392, द्वारका सेक्टर 8 में 308, मुंडका में 373, रोहिणी में 388, एनएसआईटी द्वारका में 398 एक्यूआई दर्ज किया गया और मुख्यमंत्री और प्रदूषण मंत्री कह रहे है कि हम प्रदूषण नियंत्रण के लिए हर संभव प्रयास कर रहे है।

यादव ने कहा कि क्यों मुख्यमंत्री आतिशी और इनका मंत्रीमंडल हरियाणा और यूपी में पराली जलाने और यमुना में औद्योगिक कचरा बिना ट्रीट किए छोड़ने की बात करते है परंतु पंजाब में पराली जलाने और दिल्ली के नालों का बिना ट्रीट किए गंदा पानी सीधा यमुना में गिर रहा है, जिसके लिए दिल्ली और पंजाब में आम आदमी पार्टी सीधे तौर पर जिम्मेदार है, उस पर पूरी तरह चुप क्यों हैं। उन्होंने कहा कि आतिशी को बयान देते हुए यह समझना चाहिए कि वो एक प्रदेश की मुख्यमंत्री है, उन्हें औछी भाषा और आरोप प्रत्यारोप करने की जगह अपने पद की संवैधानिक ताकत का इस्तेमाल करके दिल्ली को प्रदूषण मुक्त बनाने के लिए काम करें।

उन्होंने कहा कि दिल्ली में लोगां का विश्वास खो चुकी आम आदमी पार्टी की दिल्ली सरकार की मुख्यंत्री और पूर्व मुख्यमंत्री अरविन्द केजरीवाल ने पिछले 11वर्षों में प्रदूषण जैसी प्रमुख समस्या के असफल प्रयास करने के अलावा कुछ नही किया। श्री यादव ने कहा कि आतिशी कह रही है कि हम पानी के स्पे, एंटी-स्मॉग गन के जरिए प्रदूषण नियंत्रण का समाधान कर रहे है। मैं पूछना चाहता हूॅ, क्या 1,47,488 हैक्टेयर क्षेत्रफल की दिल्ली का प्रदूषण पानी के स्प्रे, एंटी स्मॉग गन या रेड लाईट ऑन, गाड़ी ऑफ जैसे नाकाम प्रयासों से प्रदूषण नियंत्रित हो सकता है?

उन्होंने कहा कि आम आदमी पार्टी, मुख्यमंत्री, पूर्व मुख्यमंत्री, मंत्रीमंडल सभी दमघोटू प्रदूषण को नियंत्रित करने की बजाय दिल्ली वालों को भ्रमित करने का काम कर रहे है। जब आई.ए.आर.आई के आंकडे साफ दर्शा रहे है कि पंजाब में पराली जलाने के 1581 मामले हुए है, हरियाणा में 665 और उत्तर प्रदेश में 740 घटनाएं हुई फिर अरविन्द केजरीवाल, आतिशी, गोपाल राय सहित आप नेता क्यों पंजाब के राजनीति हित में सरंक्षण कर रहे है जबकि आंकड़ो के अनुसार पंजाब ने उत्तर भारत को पराली प्रदूषण की आग में झौंकने का बड़ा दोषी है, जिसके प्रति सुप्रीम कोर्ट ने भी चिंता व्यक्त की है, क्योंकि पिछले वर्ष 2023 में पंजाब में लगभग 9000 घटनाएं पराली जलाने की सामने आई थी।

महिलाओं को 1000 रुपये देने का वायदा तो पूरा किया नही, अब नई योजना चुनावी स्टंट है।- देवेन्द्र यादव

सुषमा रानी

नईदिल्ली। दिल्ली प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष देवेन्द्र यादव ने कहा कि 3-4 चार महीने में दिल्ली सरकार का कार्यकाल खत्म हो रहा है और पिछले 11 वर्षों में दिल्ली की जनता विशेषकर वृद्ध, दिव्यांगजन और विधवा महिलाओं की की पूरी तरह अनदेखी करने वाली आम आदमी पार्टी की सरकार हर दिन नई घोषणा करके दिल्लीवालों को फिर एक अपने भ्रमर जाल में फंसाने की भरपूर कोशिश है। 60 प्रतिशत दिव्यांगों को 5000 रुपये प्रतिमाह पेंशन देने की घोषणा केवल खोखली बयानबाजी है, जिसके तहत आम आदमी पार्टी विधानसभा चुनावों अपनी खिसकी हुई जमीन को स्थिर करना चाहती है।

यादव ने कहा कि मैं पूर्व मुख्यमंत्रीअरविन्द केजरीवाल से पूछना चाहता हूॅ कि जब वृद्धों, विधवाओं और दिव्यांगजनों को पिछले कई वर्षों से पेंशन नही मिलने के कारण केन्द्र सरकार को कोसते है फिर नई योजना के लिए पैसा कहां से आने वाला है जबकि पिछले कई वर्षों में कोई नई पेंशन योजना शुरू नही की, फिर दिल्ली सरकार चुनाव नजदीक आते ही 60 प्रतिशत दिव्यांगों को 5000 रुपये पेंशन की घोषणा करके कहना कि जल्द पंजीकरण करेंगे कहकर आप पार्टी दिव्यांगों को भी धोखा दे रही है।

उन्होंने कहा कि 5000 रुपये दिव्यांगजनों को पेंशन भी आप सरकार का एक और खोखला वादा साबित होगा जैसे 2024-25 के बजट में मुख्यमंत्री महिला सम्मान योजना के तहत 18 साल से अधिक की प्रत्येक महिला को 1,000 रुपये प्रति माह का सम्मान देने का प्रस्ताव उपराज्यपाल की मंजूरी नही लेने के बाद जुमला साबित हुआ। उन्होंने कहा कि दिल्ली सरकार की निर्षक्रियता के कारण लाखों वृद्ध, विधवा और दिव्यांग अपनी पेंशन के लिए सरकार के कार्यालयों के चक्कर काट रहे है। पिछले महीने मैं आ गया हूॅ सबको पेंशन मिलेगी, सब गुमराह करने वाली बातें है, केजरीवाल दिल्ली वालों को चौतरफा गुमराह कर रहे है, क्योंकि जनता के बीच आम आदमी पार्टी अपना विश्वास खो चुकी है। उन्होंने कहा कि दिल्ली की जनता ने कांग्रेस को सत्ता में लाने का मन बना चुकी है।

'बंदा सिंह चौधरी' फिल्म की स्टारकास्ट ने किया स्पर्श ग्लोबल स्कूल का दौरा

सुषमा रानी

हाल ही में, एक्टर अरशद वारसी, मैहर विज और अभिनेता अरबाज खान अपनी आनेवाली फिल्म 'बंदा सिंह चौधरी' के प्रचार के सिलसिले में दिल्ली पहुंचे। उनके साथ निर्देशक अभिषेक सक्सेना और फिल्म के सह—निर्माता मनीष भी प्रमोशनल कार्यक्रम में उपस्थित थे। उनका प्रचार नई दिल्ली के स्पर्श ग्लोबल स्कूल में जश्न-ए-काफिला में आयोजित किया गया। फिल्म 'बंदा सिंह चौधरी' 25 अक्टूबर, 2024 को रिलीज होगी।

फिल्म 'बंदा सिंह चौधरी' वर्ष 1971 के भारत-पाक युद्ध के बाद पंजाब में सांप्रदायिक दंगों के दौरान की कहानी पेश करती है। इसमें यह दिखाया गया कि एक आदमी किस तरह देश विभाजन और भयंकर हिंसा के बीच अपने अधिकारों के लिए परिवार के अस्तित्व के लिए संघर्ष करता है। एक साधारण आदमी अपने परिवार के अधिकारों की रक्षा करने, विभाजन की गहरी पीड़ा और हिंसा के बीच खुद को जीवित रखने के लिए लड़ता और जूझता है। अभिनेता अरशद वारसी ने बताया, 'मुझे आज इस फिल्म के प्रमोशनल कार्यक्रम का हिस्सा बनकर बहुत खुशी हो रही है।' उन्होंने कहा कि आप जो भी लोग फिल्म निर्माता—निर्देशक या लेखक बनने की ख्वाहिश रखते हैं, तो इसे मूर्त रूप दें। मैं तो मानता हूं कि लेखन एक बेहद खूबसूरत काम है, इसलिए कृपया इसे जारी रखें।'

नेहा धूपिया ने दिल्ली में लाइमलाइट डायमंड्स के एक्सक्लूसिव स्टोर का उद्घाटन किया

सुषमा रानी

भारत के सबसे बड़े लैब ग्रोन डायमंड ब्रांड, लाइमलाइट डायमंड्स ने भारत की राजधानी दिल्ली में अपने दूसरे एक्सक्लूसिव स्टोर का शुभारंभ किया। दिल्ली के प्रतिष्ठित राजौरी गार्डन इलाके में इस विशेष लैब ग्रोन डायमंड ज्वेलरी की मांग को पूरा करने के लिए यह स्टोर खोला है।नए स्टोर का उद्घाटन प्रसिद्ध बॉलीवुड अभिनेत्री नेहा धूपिया, लाइमलाइट डायमंड्स के को-फाउंडर नीरव भट्ट के साथ लाइमलाइट डायमंड्स के डायरेक्टर करम चावला सहित कई अन्य प्रतिष्ठित हस्तियां इसमें शामिल हुए।

1500+ स्क्वायर फीट में भव्य रूप से फैला यह स्टोर लाइमलाइट डायमंड्स के लिए एक और माइलस्टोन है, जिससे वे पूरे भारत में अपना विस्तार जारी रख रहे हैं। पिछले दो वर्षों में, ब्रांड ने तेजी से विकास की गति को देखा है। अब तक मुंबई, कोलकाता, दिल्ली, जयपुर, वाराणसी, हैदराबाद, राजकोट, बैंगलोर, चेन्नई आदि सहित 35 से अधिक शहरों में मौजूदगी के साथ एलजीडी ज्वेलरी के लिए देश में इस ब्रांड ने तेजी से खुद को अल्टीमेट सॉलिटेयर डेस्टिनेशन के रूप में स्थापित किया है।

ब्रांड के एक्सक्लूसिव कलेक्शन को निहारते हुए अभिनेत्री नेहा धूपिया ने कहा, ₹मैं इस स्टोर के लैब ग्रोन डायमंड ज्वेलरी के कलेक्शन से काफी आकर्षित हूं। वे भारत में बने हैं और मुझे लगता है कि हर भारतीय महिला इन डायमंड्स को पहनने में गर्व महसूस करेगी।"

मीडिया से बातचीत में उन्होंने बताया कि सोने चांदी तो आप हमेशा खरीदने हो और खरीदने के बाद आपको लगता है कि बहुत पैसा खर्च हो गया अगले बार कुछ नहीं खरीदूंगा लेकिन इस धनतेरस पर आप *लाईमलाइट* से डायमंड ज्वेलरी खरीद सकते हो जो ज्यादा महंगा नहीं पड़ेगा और आपके बजट में आ जाएगा

लाइमलाइट डायमंड्स की फाउंडर और एमडी पूजा शेठ माधवन ने अपनी खुशी व्यक्त करते हुए कहा, ₹दिल्ली में लाइमलाइट के पहले आउटलेट में हमारे कलेक्शन और डिजाइन को लेकर ग्राहकों से शानदार रिस्पॉन्स मिलने के बाद हम दिल्ली में अपना दूसरा स्टोर खोलने के लिए बेहद उत्साहित हैं! इस शहर को चमक-दमक हमारे ब्रांड को बड़े अच्छे से कॉम्प्लीमेंट करते हैं।

यहां उन सभी लोगों के लिए एक बेहतरीन कलेक्शन है, जो स्मॉल डायमंड ज्वैलरी से सॉलिटेयर ज्वेलरी की ओर जाना पसंद करते हैं। इसके अलावा, हमारे ब्रांड द्वारा दिये जाने वाले बायबैक और एक्सचेंज ऑफर यह सुनिश्चित करते हैं कि ब्रांडेड उत्पाद का मूल्य पूरी तरह से सुरक्षित है, ताकि वे अपनी चमक का आनंद ले सकें।

15 गांव के लोगों के लिए नोएडा प्राधिकरण का बड़ा फैसला, आबादी का सर्वे पूरा; अब बनेगी पेरिफेरल रोड

परिवहन विशेष न्यूज

ग्रेटर नोएडा में रहने वाले 15 गांव के लोगों के लिए राहत वाली खबर है। आबादी विवाद के समाधान का रास्ता निकाल लिया गया है। अब यहां पर पेरिफेरल रोड बनाई जाएगी। बता दें मास्टर प्लान में शामिल सभी गांवों में आबादी सर्वे होगा। नोएडा ग्रेटर नोएडा और यमुना प्राधिकरण के खिलाफ आबादी अधिग्रहण के हजारों मामले विचाराधीन हैं।

ग्रेटर नोएडा। यमुना प्राधिकरण ने आबादी विवाद के समाधान का रास्ता तैयार कर दिया है। गांवों में विस्तारित आबादी को छोड़कर पेरिफेरल रोड बनाई जाएगी। प्राधिकरण क्षेत्र के 15 गांवों की आबादी का सर्वे पूरा कर लिया गया है।

प्राधिकरण की आगामी बोर्ड बैठक में सर्वे रिपोर्ट रखी जाएगी। इसके साथ ही पेरिफेरल रोड बनाने की अनुमति ली जाएगी। मास्टर प्लान में शामिल सभी गांवों की आबादी का सर्वे कराया जाएगा।

औद्योगिक विकास के लिए प्राधिकरण किसानों की जमीन का अधिग्रहण करते हैं, लेकिन खेती की जमीन के साथ आबादी के अधिग्रहण का आरोप लगाकर किसान प्राधिकरण के खिलाफ मोर्चा खोल देते हैं।

नोएडा, ग्रेटर नोएडा और यमुना प्राधिकरण के खिलाफ आबादी अधिग्रहण के हजारों मामले विचाराधीन चल रहे हैं। किसान संगठन प्राधिकरणों के खिलाफ धरना प्रदर्शन से लेकर जमीन पर कब्जा देने को तैयार नहीं है। जमीन न मिलने से प्राधिकरणों की परियोजनाएं अटकी हुई हैं।

आबादी संबंधित मामलों के समाधान के लिए यमुना प्राधिकरण ने नई रणनीति तैयार की थी। इसे अमलीजामा पहनाना शुरू हो चुका है। इसके तहत गांवों का ड्रोन सर्वे कराया गया है। इसमें गांवों की मूल आबादी के साथ विस्तारित आबादी को भी शामिल किया गया है।

आबादी भूखंड विकसित कर किसानों को किया जाएगा आवंटित

इस सर्वे के आधार पर गांव के चारों ओर पेरिफेरल रोड का निर्माण होगा। आबादी की ओर की जमीन पर जिन किसानों का कब्जा है, उन्हीं के पास रहेगी। जिन गांवों में प्राधिकरण जमीन अधिगृहीत या क्रय कर चुका है और सर्वे में वह जमीन आबादी क्षेत्र में शामिल हैं तो उस जमीन पर सात प्रतिशत के आबादी भूखंड विकसित कर उन्हें किसानों को आवंटित कर दिया जाएगा।

प्राधिकरण के मुख्य कार्यपालक अधिकारी डा. अरुणवीर सिंह का कहना है कि सर्वे रिपोर्ट पर बोर्ड की स्वीकृति लेकर पेरिफेरल रोड का निर्माण होगा। सर्वे और पेरिफेरल रोड के निर्माण से आबादी अधिग्रहण को लेकर होने वाले विवादों की संभावनाएं समाप्त हो जाएंगी।

इन्हें अधिग्रहण प्रस्ताव से रखा जाएगा बाहर

सर्वे के आधार पर ही तैयार होंगे जमीन अधिग्रहण के प्रस्ताव यमुना प्राधिकरण गांवों में जमीन अधिग्रहण का प्रस्ताव आबादी सर्वे के आधार पर ही तैयार करेगा। जिन खसरा नंबर में आबादी होगी, उन्हें अधिग्रहण प्रस्ताव से बाहर रखा जाएगा। प्राधिकरण ने सर्वे के लिए पूर्व में जिला प्रशासन को भेज गए अधिग्रहण प्रस्ताव भी वापस मंगा लिए थे।

गुरुग्राम में GMDA की अतिक्रमण पर हुई बड़ी कार्रवाई, एमजी रोड और सोहना रोड पर चला बुलडोजर

गुरुग्राम महानगर विकास प्राधिकरण (जीएमडीए) ने एमजी रोड सोहना रोड फाजिलपुर रोड और घसोला रोड पर अतिक्रमण हटाने के लिए अभियान चलाया। इस अभियान में अवैध निर्माण ठेले रेहड़ी और ढाबों के अवैध बैठने के क्षेत्रों को हटाया गया। जीएमडीए ने प्रमुख सड़कों और ग्रीनबेल्ट को अवैध अतिक्रमण से मुक्त कराया गया। जीएमडीए ने विक्रेताओं से प्लास्टिक का उपयोग बंद करने के निर्देश दिए।

जीएमडीए द्वारा चलाए जा रहे नियमित अतिक्रमण विरोधी अभियान में जीएमडीए की प्रमुख सड़कों और ग्रीनबेल्ट को अवैध अतिक्रमण से मुक्त कराया गया।

गुरुग्राम। गुरुग्राम महानगर विकास प्राधिकरण (जीएमडीए) की एन्फोर्समेंट टीम ने एमजी रोड, सोहना रोड, फाजिलपुर रोड और घसोला रोड पर अतिक्रमण के विरुद्ध अभियान चलाया।

यह अभियान जीएमडीए के मुख्य कार्यकारी अधिकारी द्वारा प्राधिकरण के अधिकार क्षेत्र के तहत मास्टर सड़कों, फुटपाथों और ग्रीन बेल्ट को अतिक्रमण मुक्त करने के निर्देशों के अनुसार भी चलाया गया ताकि इनकी उपयोगिता को बढ़ाया जा सके और गुरुग्राम शहर के सुंदरीकरण के लिए इन्हें और विकसित किया जा सके। साथ ही पिछले 10 दिनों से

अवैध निर्माण और अतिक्रमण पर कड़ी कार्रवाई

डीटीपी, जीएमडीए, आरएस बाठ के नेतृत्व में यह अभियान एमजी रोड से शुरू हुआ, जो तीन घंटे तक चला। इस दौरान अवैध निर्माण और अतिक्रमण पर कड़ी कार्रवाई की गई। गुरुग्राम नगर निगम की टीम ने इस अभियान में सक्रिय रूप से सहयोग किया और एमजी रोड से 27 अवैध गाड़ियां हटाई गईं। इस अभियान में जीएमडीए टीम के साथ ट्रैफिक पुलिस भी शामिल थी और उन्होंने गलत पार्किंग के करीब 62 चालान जारी किए और साथ ही ट्रैफिक जाम का कारण बन रही आठ कारों को जब्त किया गया।

टीम ने सोहना रोड पर सार्वजनिक स्थानों पर ढाबा संचालकों द्वारा बनाए गए अवैध बैठने के क्षेत्रों को और रेहड़ी वालों द्वारा अतिक्रमण करने वालों को हटाया। उन्होंने सभी विक्रेताओं से अनुरोध किया कि वे क्षेत्र को खाली कर दें, अन्यथा सड़क किनारे लगे ठेले डीटीपी इंफोर्समेंट द्वारा हटा दिए जाएंगे। अभियान के दौरान मौजूद लोगों ने डीटीपी को सोहना रोड पर अन्य प्रमुख बिंदुओं के अलावा फाजिलपुर रोड और घासोला रोड के प्रवेश बिंदुओं का निरीक्षण करने का अनुरोध भी किया।

पॉलीथिन के उपयोग पर होगी कार्रवाई

डीटीपी ने विक्रेताओं द्वारा लगाए गए ठेलों का भी निरीक्षण किया और यह पाया कि वे भारी मात्रा में पालीथिन का उपयोग कर रहे हैं। उन्होंने इन सभी को प्लास्टिक का उपयोग बंद करने और प्लास्टिक मुक्त गुरुग्राम शहर सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। अभियान के दौरान सेक्टर 49 में घसोला रोड, सेक्टर 48 में सोहना रोड से फाजिलपुर रोड तक अतिक्रमण करने वाले 15 खोखे और पांच विक्रेताओं को भी हटा दिया गया।

जमकर गरजा GDA का बुलडोजर, कई अवैध कॉलोनियां ध्वस्त; पांच होटलों पर भी हुआ एक्शन

परिवहन विशेष न्यूज

गाजियाबाद में अवैध निर्माण के खिलाफ जीडीए की कार्रवाई जारी है। ताजा मामले में गाजियाबाद विकास प्राधिकरण (जीडीए) ने हरनंदी डूब क्षेत्र में अवैध रूप से काटी जा रही पांच कॉलोनियों में बुलडोजर चलाया। अवैध प्लॉटिंग करने वालों को कड़ी कार्रवाई की चेतावनी दी गई है। साथ ही आवास विकास परिषद ने 53 डिफाल्टरों के खिलाफ आरसी जारी की है।

साहिबाबाद। हरनंदी डूब क्षेत्र में अवैध प्लॉटिंग कर काटी जा रही पांच कॉलोनियों में गाजियाबाद विकास प्राधिकरण (जीडीए) की टीम ने मंगलवार को बुलडोजर चलाया। कॉलोनी की चारदीवारी, सड़क आदि को ध्वस्त कर दिया। अवैध रूप से प्लॉटिंग करने वालों को कड़ी कार्रवाई की चेतावनी दी गई है।

इन इलाकों में काटी जा रही थी कॉलोनियां

प्रवर्तन जोन आठ के करहैड़ा, असालतपुर, हरनंदी, सिकरानी, चिरौडी रोड, प्रेम नगर, रामेश्वर पार्क, गढ़ी कटैया गांव में डूब क्षेत्र में पांच अवैध कॉलोनी बनाकर प्लॉटिंग की जा रही थी। कॉलोनी में प्लॉट बेचे जा रहे थे। प्लॉट बेचने के लिए उनका प्रचार प्रसार किया जा रहा था। अनजाने में लोग प्लाट खरीदकर अपनी जमा पूंजी को निवेश कर रहे थे।

शिकायत मिलने पर जीडीए की टीम कॉलोनी में पहुंची। अवैध प्लॉटिंग को ध्वस्त कर दिया गया। कार्रवाई के समय सहायक अभियंता, अवर अभियंता और सुपरवाइजर स्टाफ के साथ उपस्थित रहे। निर्माणकर्ता को निर्देशित किया गया है कि वह मानचित्र स्वीकृत के अनुसार ही निर्माण करें।

डिफाल्टरों को आरसी जारी

आवास विकास परिषद ने 53 डिफाल्टरों के खिलाफ आरसी जारी की है। सभी पर करीब पांच करोड़ रुपये का बकाया हैं। इनके खिलाफ तहसील स्तर से नोटिस, कुर्की और गिरफ्तारी की कार्रवाई हो सकती है।

आवास विकास परिषद के संपत्ति प्रबंधक नृपेंद्र बहादुर सिंह ने बताया कि डिफाल्टरों पर करीब 10 वर्ष से बकाया है। नोटिस जारी करने के बाद भी डिफॉल्टरों ने बकाया जमा नहीं किया। इससे विभाग को आर्थिक क्षति हो रही है।

बजरिया के पांचों होटल सील

सितंबर माह में देह व्यापार का मामला सामने आने के बाद बजरिया के पांच होटल जिला प्रशासन की रिपोर्ट के बाद पुलिस ने सील कर दिए हैं। दैनिक जागरण ने चार अक्टूबर के अंक में बिना लाइसेंस चल रहे थे। 'बजरिया के पांच होटल, होंगे सील' शीर्षक के साथ समाचार प्रकाशित कर बताया था कि जिला प्रशासन ने होटल सील करने की संस्तुति कर दी है।

होटल मालिक युवतियों से कराते थे देह व्यापार

26 सितंबर को एसीपी कोतवाली रितेश त्रिपाठी ने बजरिया के पांच होटल में पुलिस टीम के साथ छापा मार था। इस दौरान होटल में देह व्यापार का पर्दाफाश हुआ था। पुलिस ने युवतियों को रेस्क्यू किया तो पता चला कि होटलों में नौकरी के बहाने युवतियों को बुलाकर होटल मालिक देह व्यापार कराते थे।

इस मामले में कोतवाली पुलिस ने होटल के लाइसेंस की जानकारी जिला प्रशासन से मांगी थी। जिला प्रशासन ने जब होटल संचालकों को सराय एक्ट के तहत लाइसेंस लेने के संबंध में नोटिस जारी कर जानकारी मांगी तो संतोषजनक जवाब नहीं मिला। इसके बाद जिला प्रशासन ने होटलों को सील करने के लिए पत्र जारी कर दिया था।

बदलते वक्त की मांग है हिंदुओं की जनसंख्या बढ़ाने के बारे में सोचना

कमलेश पांडे

ऐसा करना इसलिए भी जरूरी है कि दुनिया में सबसे ज्यादा आबादी ईसाइयों की है, फिर दूसरी बड़ी आबादी इस्लाम मतावलंबियों की है। जबकि हिन्दू आबादी संसार की तीसरी बड़ी आबादी है। व्यापार में भी इसी तरह से संख्या बल में हिंदू कारोबारी तीसरे पायदान पर हैं।

राष्ट्रीय राजनीति की अपनी चिंताएं हैं, जबकि सूबाई राजनीति की अपनी दुश्चिंताएं! लोकतांत्रिक सियासत में इनमें तालमेल बिठाना वाकई दुष्कर कार्य है, क्योंकि राष्ट्रीय हितों के ऊपर कहीं साम्प्रदायिक, कहीं जातीय और कहीं क्षेत्रीय हितों को हावी किया जाता रहा है और ऊटपटांग वकालत की जाती रही है। ऐसे में हरेक सिक्के के दो पहलु की तरह ही इन्हें भी लिए जाने की जरूरत है और हमारे समग्र राष्ट्रीय हित कैसे सध सकें, इसके लिए प्राथमिकता तय किये जाने की जरूरत है।

देखा जाए तो भारत में अप्रत्याशित रूप से मुस्लिमों की बढ़ती जनसंख्या जहां कुछ राजनीतिक दलों व सामाजिक संस्थाओं के लिए चिंता की बात है और इन्हें नियंत्रित किये जाने की वकालत हिन्दू समुदाय के नेता व समाजसेवी खुलेआम कर रहे हैं और तत्सम्बन्धी डेटा भी सार्वजनिक कर रहे हैं। वहीं, इस बात की वकालत भी की जा रही है कि हिंदुओं को भी बंध्याकरण व नसबंदी की नीति का परित्याग करके ज्यादा बच्चे पैदा करना चाहिए, ताकि मुस्लिमों के मुकाबले हिंदुओं की जनसंख्या ज्यादा बनी रहे। कमोबेश यही वैश्विक डिमांड भी है। हमारे पास अकूत प्राकृतिक संसाधन हैं, पास-पड़ोस में जनसंख्या के समुचित समायोजन की संभावनाएं हैं और शेष विश्व में बहुत सारे भूभाग आबादी विहीन हैं, जहां रणनीतिक रूप से हिंदुओं को बसाने में कोई दिक्कत भी नहीं आएगी, क्योंकि हमारे वीर-बांकुडों और समझदार लोगों की मांग यत्र-तत्र-सर्वत्र है। हां, इसके लिए स्पष्ट वैश्विक, राष्ट्रीय और सूबाई सोच होनी चाहिए और सबमें बेहतर तालमेल की गुंजाइश बनी रहनी चाहिए।

ऐसा करना इसलिए भी जरूरी है कि दुनिया में सबसे ज्यादा आबादी ईसाइयों की है, फिर दूसरी बड़ी आबादी इस्लाम मतावलंबियों की है। जबकि हिन्दू आबादी संसार की तीसरी बड़ी आबादी है। व्यापार में भी इसी तरह से संख्या बल में हिंदू कारोबारी तीसरे पायदान पर हैं। यही वजह है कि हिंदुओं को भी अपनी आबादी मुस्लिमों की तरह बेतहाशा बढ़ानी चाहिए और ईसाई व इस्लाम मतावलंबियों की तरह वैश्विक मतांतरण अभियान दुनिया के हरेक देशों में छेड़ना चाहिए। चूंकि अधिकांश धर्म सनातन मतावलंबियों से ही टूटकर बने हैं, इसलिए घरवापसी अभियान भी चलाया जा सकता है। इसके लिए हिन्दू धर्म को सरल बनाना होगा, ताकि अल्प आय वर्ग के लोग भी इसमें फिट बैठ सकें और मौजूदा आडंबरों की मार उनपर नहीं पड़े। कहना न होगा कि यदि ऐसी रणनीति नहीं अपनाई गई तो निकट भविष्य में अस्तित्व रक्षा के भी लाले पड़ जाएंगे।

इतिहास साक्षी है कि ईसाई व यहूदी धर्म की उत्पत्ति भी इस्लाम धर्म से ही हुई है, इसलिए जब दोनों जुड़वां धार्मिक ताकतें एक हो जाएंगी तो हिंदुओं की वैश्विक परेशानी ज्यादा बढ़ जाएगी। ऐसे में हिंदुओं की जनसंख्या वृद्धि का विचार दूरदर्शिता भरा दृष्टिकोण है, यदि सही मायने में देखा जाए तो। इसलिए अब जो दक्षिण भारत से जनसंख्या वृद्धि के सुर सुनाई देने लगे हैं, उससे उत्तर भारत के लोगों को भी सबक लेनी चाहिए और पारस्परिक तालमेल बिठाकर अपने राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय धार्मिक व लोकतांत्रिक हितों की रक्षा करनी चाहिए।

बता दें कि संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष (यूएनएफपीए) और इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट फॉर पॉपुलेशन साइंसेज (आईआईपीएस) द्वारा तैयार इंडिया एजिंग रिपोर्ट 2023 के अनुसार, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, केरल, तमिलनाडु और तेलंगाना में बुजुर्गों की आबादी अधिक है। इसे संतुलित करने के लिए ही टीडीपी नेता और आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री चंद्रबाबू नायडू ने पिछले हफ्ते कहा था कि लोगों को अधिक बच्चे पैदा करने चाहिए। उन्होंने यह भी कहा था कि उनकी सरकार इसे प्रोत्साहित करने के लिए कानून लाने की योजना भी बना रही है। राज्य की बुजुर्ग होती आबादी को देखते हुए यह एक नेक कदम है।

इसके बाद तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एमके स्टालिन ने एक पुराने आशीर्वाद का जिक्र करते हुए लोगों को 16 बच्चे पैदा करने की सलाह और शुभकामना दे डाली। इससे भी कोई दिक्कत नहीं है। समुद्र में फ्लोटिंग हाउस बनाने और ऐसे ही प्राकृतिक जमीन विकसित करने की पूरी गुंजाइश है। बहरहाल, दोनों मुख्यमंत्री यह सलाह इसलिए दे रहे हैं क्योंकि जल्द ही देश में संसदीय सीटों का नये सिरे से परिसीमन होना है। इस परिसीमन के मुताबिक दस लाख लोगों की आबादी पर एक सांसद होगा।

चूंकि दक्षिणी राज्यों ने जनसंख्या नियंत्रण के मामले में तो बेहतरीन प्रदर्शन कर किया है, जिसकी वजह से वहां प्रजनन दर कम हो गयी है। इसलिए उन्हें अब यह डर सता रहा है कि यदि आबादी के लिहाज से संसदीय सीटों का निर्धारण हुआ तो देश की राष्ट्रीय राजनीति पूरी तरह उत्तर भारत केंद्रित हो जायेगी। लेकिन यदि हिंदुत्व की अंतर्राष्ट्रीय उपस्थिति के नजरिए से देखा जाए तो दक्षिण भारत के मुख्यमंत्रियों का ताजा आह्वान भारत और हिंदुत्व दोनों के लिए बरदान साबित हो सकता है। इसलिए यह कहना कि देश में एक ओर उत्तर भारत में जनसंख्या नियंत्रण कानून लाये जाने की मांग हो रही है तो दूसरी ओर दक्षिण भारत के दो प्रमुख राज्यों के मुख्यमंत्री अपनी जनता को ज्यादा से ज्यादा बच्चे पैदा करने की सलाह दे रहे हैं, में कोई दिक्कत नहीं है। बस, उत्तर भारत के नेताओं को अपना नजरिया बदलना होगा और हिंदुओं की जनसंख्या में अधिकाधिक वृद्धि की रणनीति बनानी होगी। वहीं, मोदी सरकार को भी बदलते नजरिए के मुताबिक विदेश नीति बनानी होगी।

बता दें कि संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष (यूएनएफपीए) और इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट फॉर पॉपुलेशन साइंसेज (आईआईपीएस) द्वारा तैयार इंडिया एजिंग रिपोर्ट 2023 के अनुसार, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, केरल, तमिलनाडु और तेलंगाना में बुजुर्गों की आबादी अधिक है। रिपोर्ट कहती है कि 2021 और 2036 के बीच इन राज्यों में बुजुर्गों की दर में बहुत अधिक तेजी से वृद्धि होगी। माना जा रहा है कि केरल की जनसंख्या में बुजुर्गों की हिस्सेदारी 2021 की 16.5% से बढ़कर 2036 में 22.8% हो जाएगी। वहीं, तमिलनाडु में 13.7% से बढ़कर 2036 में 20.8% हो जाएगी। उधर, आंध्र प्रदेश में 2021 के 12.3% से बढ़कर 2036 में 19% हो जाएगी, जबकि कर्नाटक में बुजुर्गों की आबादी 11.5% से बढ़कर 2036 में 17.2% हो जाएगी और तेलंगाना में 2021 के 11% से बढ़कर 2036 में 17.1% हो जाएगी।

इसप्रकार मोटे तौर पर यदि देखें तो 15 साल की इस अवधि में जनसंख्या में बुजुर्गों का अनुपात दक्षिण में 6-7% बढ़ जाएगा जबकि उत्तर में यह लगभग 3-4% होगा। वैसे एक बात गौर करने लायक है कि अधिकांश दक्षिण भारतीय राज्य दुनिया के विकसित देशों की प्रजनन स्तर तक पहुंच गए हैं। इसके अलावा, भारत के रजिस्ट्रार जनरल द्वारा 2016-19 के लिए एकत्र किए गए उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार, आंध्र प्रदेश में जीवन प्रत्याशा 69.1 वर्ष, केरल में 71.9 वर्ष और तमिलनाडु में 71.4 वर्ष थी। केवल कर्नाटक की जीवन प्रत्याशा दर राष्ट्रीय औसत से थोड़ी कम यानि 67.9 थी।

वहीं, एक समस्या यह है कि भारत ने अपनी प्रजनन दर बहुत तेजी से कम की है। जहां प्रति महिला छह बच्चों से घटकर दो या एक बच्चे पर आने में फ्रांस को 285 साल लगे, इंग्लैंड को 225 साल लगे, किंतु भारत को इस काम में महज 45 साल लगे। हालांकि, चीन ने इससे भी कम समय में जनसंख्या को नियंत्रित किया, लेकिन वहां ऐसा अत्यंत कठोर और दंडात्मक प्रावधानों के चलते संभव हो सका।

इसके अलावा, दक्षिणी राज्यों की चिंता का बड़ा कारण जल्द ही होने वाला लोकसभा सीटों का परिसीमन भी है। यह कार्य जनगणना के तुरंत बाद होगा। बता दें कि देश में वर्तमान में निर्वाचन क्षेत्र की सीमाएँ जनसंख्या के अनुसार तय की जाती हैं। यदि जन्म दर स्थिर रहती है तो आंध्र प्रदेश में संसद सीटों की संख्या 25 से घटकर 20, कर्नाटक में 28 से 26, केरल में 20 से 14, तमिलनाडु में 39 से 30 और तेलंगाना में 17 से 15 तक हो जाने की उम्मीद है।

वहीं दूसरी ओर, उत्तर के राज्यों की जनसंख्या अधिक होने से उनके निर्वाचन क्षेत्रों की संख्या में वृद्धि होगी, जिससे उन्हें संसद में बड़ी आवाज मिलेगी। इसके अलावा यदि संसद की सीटें बढ़ाने का फैसला होता है तो भी उत्तरी राज्यों को ही ज्यादा फायदा होगा, क्योंकि दक्षिण में जनसंख्या अनुपात के हिसाब से कम सीटें आएंगी। इसलिए भले ही उत्तर-दक्षिण की सियासी प्रतिस्पर्धा में जनसंख्या वृद्धि जैसा नेक विचार सामने आया है। वहीं, जब जनसंख्या में ज्यादा वृद्धि हो जाएगी, तब सीमा विस्तार का विचार भी नेताओं के मन में देर-सबेर आएगा ही। यह स्थिति वैश्विक हिंदुत्व के अनुकूल होगी।

जहां तक मुख्यमंत्रियों के बयान की बात है तो आपको बता दें कि चंद्रबाबू नायडू ने तो यहां तक कह दिया है कि दो से ज्यादा बच्चे वाला व्यक्ति ही स्थानीय निकाय चुनाव लड़ पायेगा। वहीं, पड़ोसी राज्य तेलंगाना में भी ऐसा कानून लाने की मांग हो रही है ताकि लोग ज्यादा बच्चे पैदा करें। वहीं, तमिलनाडु के मुख्यमंत्री ने कहा है कि लोकसभा परिसीमन प्रक्रिया से कई दंपतियों के ''16 (तरह की संपत्ति) बच्चों'' की तमिल कहावत की ओर वापस लौटने की उम्मीदें बढ़ सकती हैं। मुख्यमंत्री ने जनगणना और लोसकभा परिसीमन प्रक्रिया का जिक्र करते हुए कहा कि नवविवाहित जोड़े अब कम बच्चे पैदा करने का विचार त्याग सकते हैं। उन्होंने कहा कि अतीत में बुजुर्ग नवविवाहित जोड़ों को 16 बच्चों का नहीं बल्कि 16 तरह की संपत्ति अर्जित करने और खुशहाल जीवन जीने का आशीर्वाद देते थे, जिसमें प्रसिद्धि, शिक्षा, वंश, धन आदि शामिल हैं। उन्होंने कहा कि लोगों को लगता है कि अब उन्हें सचमुच 16 बच्चे पैदा करने चाहिए, न कि एक छोटा और खुशहाल परिवार रखना चाहिए।

इस दिशा में हमारे बड़े-बड़े मंदिरों को भी सामने आना चाहिए और छोटे-छोटे मंदिरों की अकूत आय को साधकर पूरी दुनिया में मंदिरों का जाल बिछाने और वहां हिंदुओं की आबादी बढ़ाने की निजी पंचवर्षीय योजना बनानी चाहिए। इसमें एनआरआई, भारत सरकार, विभिन्न राज्य सरकारों, विभिन्न सामाजिक संगठनों का भी सहयोग लेना चाहिए। इससे हिंदुओं की आबादी और कारोबार दोनों में इजाफा होगा, यदि नेक मन से इसपर विचार किया जाए तो। इस नजरिए से भी उत्तर भारत के नेताओं को सोचना होगा। कहा भी गया है कि अग्र सोची, सदा सुखी।

– :सौजन्य :–
ईवी ड्राइव द फ्यूचर
EV
Drive the Future

दिल्ली में तीन जगहों पर आयोजित होगा Auto Expo, कैसा रहेगा पूरा शेड्यूल

परिवहन विशेष न्यूज

भारत लगातार वाहन निर्माताओं के लिए बड़ा बाजार बनता जा रहा है। इसी को देखते हुए Bharat Mobility के पहले संस्करण के आयोजन के बाद दूसरी बार भी इसे आयोजित किया जा रहा है। January 2025 में होने वाले इस कार्यक्रम को कहां-कहां पर किया (Bharat Mobility 2025 Locations) जाएगा। कितनी कंपनियां इस कार्यक्रम में हिस्सा ले सकती हैं।

नई दिल्ली। भारत में जिस तरह से वाहनों की मांग में बढ़ रही है उसे देखते हुए वाहन निर्माता भी लगातार नई तकनीक और वाहनों को भारत में पेश कर रहे हैं। ऑटो एक्सपो की जगह अब Bharat Mobility के दूसरे संस्करण का आयोजन किया जाएगा। भारत मोबिलिटी के दूसरे संस्करण को कब और कहां आयोजित (When is Bharat Mobility Expo 2025) किया जाएगा। किस जगह पर किस तरह की तकनीक और वाहनों को देखा जा सकेगा। हम इसकी जानकारी आपको इस खबर में दे रहे हैं।

कब होगा आयोजन

भारत मोबिलिटी ग्लोबल एक्सपो के दूसरे संस्करण का आयोजन अगले साल किया जाएगा। सरकार की ओर से जानकारी दी गई है कि साल 2025 में इसका आयोजन 2024 के मुकाबले में ज्यादा बड़े स्तर पर किया जाएगा।

कहां होगा आयोजन

सरकार की ओर से भारत मोबिलिटी के दूसरे संस्करण के आयोजन के साथ ही वेन्यू की भी जानकारी दी गई है। जानकारी के मुताबिक अगले साल इस कार्यक्रम का आयोजन तीन स्थानों (Bharat Mobility 2025 Locations) पर होगा। जिसमें दिल्ली में भारत मंडपम, द्वारका में यशोभूमि और ग्रेटर नोएडा में इंडिया एक्सपो सेंटर एंड मार्ट शामिल हैं।

कहां लगेगा गाड़ियों का मेला

Bharat Mobility 2025 में मुख्य कार्यक्रम दिल्ली के Bharat Mandapam में होगा। यहां पर 17 जनवरी से 22 जनवरी के बीच Auto Expo 2025 का आयोजन किया जाएगा। इसके अलावा यहां पर इंडिया इंटरनेशनल टायर शो, इंडिया साइकिल शो, भारत बैटरी शो, स्टील पवेलियन और मोबिलिटी टेक पवेलियन का आयोजन किया जाएगा।

यशोभूमि में होगा कंपोनेंट शो का आयोजन

दिल्ली के द्वारका में भी Bharat Mobility 2025 का आयोजन किया जाएगा। यहां पर 18 जनवरी से 21 जनवरी के बीच इस कार्यक्रम का आयोजन होगा। जिसमें कंपोनेंट शो को आयोजित किया जाएगा।

ग्रेटर नोएडा में भी होगा कार्यक्रम

19 से 22 जनवरी 2025 के बीच उत्तर प्रदेश के ग्रेटर नोएडा के इंडिया एक्सपो मार्ट में भी इसी कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा। ग्रेटर नोएडा में भारत कंस्ट्रक्शन इक्विपमेंट एक्सपो और अर्बन मोबिलिटी और इंफ्रास्ट्रक्चर शो को आयोजित किया जाएगा।

कौन सी कंपनियां होंगी शामिल

ऑटो एक्सपो 2025 में कमर्शियल वाहन, इलेक्ट्रिक और हाइब्रिड वाहन, यात्री वाहन, विशेष वाहन, तीन पहिया, दो पहिया, मिलिट्री वाहन, एग्रीकल्चरल वाहन को दिखाया जाएगा।

भारत ने भूटान के प्रधानमंत्री को हरित हाइड्रोजन बस दिखाई

परिवहन विशेष न्यूज

पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्री हरदीप सिंह पुरी ने भूटान के प्रधानमंत्री शेरिंग तोबगे और उनके प्रतिनिधिमंडल को हाइड्रोजन ईंधन से चलने वाली बस दिखाई, जो हरित हाइड्रोजन गतिशीलता में भारत की बढ़ती प्रगति का प्रदर्शन है। प्रेस सूचना ब्यूरो के अनुसार इंडियन ऑयल द्वारा विकसित यह बस टिकाऊ परिवहन समाधानों को बढ़ावा देने के भारत के प्रयासों को दर्शाती है।

इस कार्यक्रम में इंडियन ऑयल के अध्यक्ष और निदेशक (विपणन) वी सतीश कुमार सहित वरिष्ठ गणमान्य लोगों ने भाग लिया और स्वच्छ ऊर्जा भविष्य के एक प्रमुख घटक के रूप में हरित हाइड्रोजन के प्रति भारत की प्रतिबद्धता को रेखांकित किया। पुरी ने कहा कि हरित हाइड्रोजन में भारत की प्रगति स्थायी ऊर्जा समाधानों के प्रति उसकी प्रतिबद्धता का प्रमाण है। उन्होंने कहा, "हम स्वच्छ, हरित भविष्य का मार्ग प्रशस्त करने के लिए भूटान जैसे क्षेत्रीय भागीदारों के साथ सहयोग करने के लिए उत्सुक हैं।"

यह प्रदर्शन हरित ऊर्जा पहल को आगे बढ़ाने के लिए भारत और भूटान के साझा दृष्टिकोण को दर्शाता है। भूटान के प्रतिनिधिमंडल ने अपने पर्यावरणीय स्थिरता प्रयासों के हिस्से के रूप में हरित हाइड्रोजन प्रौद्योगिकी को अपनाने में रुचि व्यक्त की।

इंडियनऑयल 2004 से हाइड्रोजन अनुसंधान में सबसे आगे रहा है, शुरुआत में हाइड्रोजन-सीएनजी मिश्रणों के साथ काम कर रहा था। हाल के वर्षों में, कंपनी ने अपनी हरित हाइड्रोजन पहलों का विस्तार किया है, जिसमें हाइड्रोजन भंडारण, परिवहन और विभिन्न औद्योगिक अनुप्रयोगों पर केंद्रित परियोजनाएं शामिल हैं। फरीदाबाद में इंडियनऑयल के आरएंडडी सेंटर में स्थित भारत का पहला हाइड्रोजन डिस्पेंसिंग स्टेशन चालू है, और टाटा मोटर्स के साथ सहयोग से हरित हाइड्रोजन ईंधन सेल बसों का विकास हुआ है।

वर्तमान में दिल्ली एनसीआर क्षेत्र में भारतीय सेना और नौसेना के लिए एक-एक सहित आठ ईंधन सेल बसें चल रही हैं। वडोदरा में चार अतिरिक्त बसें चल रही हैं, जिन्हें इंडियनऑयल के हाइड्रोजन डिस्पेंसिंग इंफ्रास्ट्रक्चर द्वारा सहायता प्रदान की जा रही है। कंपनी के प्रयास पर्यावरण अनुकूल परिवहन समाधानों को बढ़ावा देने में इसके नेतृत्व को मजबूत करते हैं।

हाइड्रोजन-ईंधन वाले परिवहन का यह प्रदर्शन भारत के डीकार्बोनाइजेशन लक्ष्यों को प्राप्त करने और भविष्य के लिए एक व्यवहार्य ऊर्जा स्रोत के रूप में हरित हाइड्रोजन को विकसित करने की दिशा में व्यापक प्रयास का हिस्सा है।

हाइड्रोजन ईंधन सेल बसों को सबसे अधिक पर्यावरण के अनुकूल वाहनों में से एक माना जाता है, क्योंकि वे ग्रीन हाइड्रोजन पर चलते हैं, जो ईंधन के रूप में उपयोग किए जाने पर केवल जल वाष्प और हाइड्रोजन को उपोत्पाद के रूप में उत्सर्जित करता है। भारत की पहली ग्रीन हाइड्रोजन ईंधन सेल बस का अनावरण भारत ऊर्जा सप्ताह (IEW) के उद्घाटन समारोह के दौरान किया गया, जो 6 फरवरी को गोवा में शुरू हुआ था।

दिवाली 2024 के मौके पर खरीदनी है Mahindra 3XO SUV, जान लें किस वेरिएंट पर कितना है Waiting Period

परिवहन विशेष न्यूज

Mahindra की ओर से भारतीय बाजार में कई बेहतरीन एसयूवी की बिक्री की जाती है। Compact SUV के तौर पर Mahindra XUV 3XO को ऑफर किया जाता है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक अगर इस गाड़ी को आप Diwali 2024 में खरीदने पर विचार कर रहे हैं तो जान लें किस एसयूवी के किस वेरिएंट पर कितना इंतजार करना पड़ सकता है।

नई दिल्ली। देश की प्रमुख वाहन निर्माता Mahindra की ओर से कई बेहतरीन एसयूवी को ऑफर किया जाता है। सब फोर मीटर सेगमेंट में कंपनी की ओर से Mahindra XUV 3XO की बिक्री की जाती है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक इस गाड़ी को अगर Diwali 2024 पर खरीदने का मन बना रहे हैं, तो डिलीवरी के लिए कितना इंतजार (Mahindra 3XO SUV Waiting Period) करना पड़ सकता है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

करना होगा इंतजार

महिंद्रा की ओर से अप्रैल 2024 में ही Mahindra XUV 3XO को बाजार में लॉन्च किया गया था। जिसके बाद जून के आखिर से इसकी डिलीवरी को शुरू किया गया था। कंपनी की इस छोटी एसयूवी की बाजार में काफी ज्यादा मांग है। अगर आप भी Diwali 2024 के दौरान नई गाड़ी के तौर पर Mahindra XUV 3XO को खरीदने का मन बना रहे हैं तो आपको काफी लंबा इंतजार भी करना पड़ सकता है।

Waiting Period on Mahindra XUV 3XO

महिंद्रा की ओर से ऑफर की जाने वाली इस एसयूवी पर मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक एक महीने से लेकर एक साल तक की वेटिंग चल रही है। हालांकि गाड़ी के अलग-अलग वेरिएंट पर Waiting Period अलग अलग हो सकता है। इसके डीजल वेरिएंट्स पर सिर्फ एक महीने की वेटिंग चल रही है। लेकिन इसके पेट्रोल वेरिएंट्स पर एक महीने से लेकर एक साल तक का इंतजार करना पड़ सकता है।

किस वेरिएंट पर सबसे ज्यादा इंतजार

जानकारी के मुताबिक एसयूवी के पेट्रोल बेस वेरिएंट पर एक साल तक की वेटिंग चल रही है। इसके बाद MX2, MX2 Pro और AX5 के लिए भी सात से आठ महीने तक का इंतजार करना पड़ सकता है। MX3 और MX3 Pro को खरीदना है तो आपको छह से सात महीने वेट करना होगा। एसयूवी के टॉप वेरिएंट्स AX5L, AX7 और AX7L को घर लाने के लिए आपको दो महीने का इंतजार करना होगा।

कितना दमदार इंजन

अपने सेगमेंट में आने वाली इस गाड़ी के बेस वेरिएंट से ही टर्बो इंजन का विकल्प दिया जाता है। कंपनी इसमें कुल तीन इंजन के विकल्प देती है। जिनमें 1.2 लीटर टर्बो पेट्रोल से 83 किलोवाट की पावर और 200 न्यूटन मीटर का टॉर्क मिलता है। दूसरे इंजन के विकल्प के तौर पर भी 1.2 लीटर की क्षमता का टीजीडीआई पेट्रोल इंजन मिलता है। जिससे 96 किलोवाट की पावर और 230 न्यूटन मीटर का टॉर्क मिलता है। वहीं तीसरे इंजन के तौर पर 1.5 लीटर की क्षमता का टर्बो डीजल इंजन मिलता है जिससे इसे 86 किलोवाट की पावर और 300 न्यूटन मीटर का टॉर्क मिलता है।

कितनी है कीमत

महिंद्रा की एक्सयूवी 3एक्सओ की शुरुआती एक्स शोरूम कीमत 7.79 लाख रुपये है। इसके टॉप वेरिएंट को 15.49 लाख रुपये की एक्स शोरूम कीमत पर खरीदा जा सकता है।

मर्सिडीज-बेंज ने यूरोप का पहला बैटरी रीसाइक्लिंग प्लांट खोला

परिवहन विशेष न्यूज

मर्सिडीज-बेंज ने यूरोप का पहला बैटरी रीसाइक्लिंग प्लांट खोला है जिसमें एक एकीकृत मैकेनिकल-हाइड्रोमेटलर्जिकल प्रक्रिया है, जिससे यह दुनिया भर में अपनी खुद की इन-हाउस सुविधा के साथ बैटरी रीसाइक्लिंग लूप को बंद करने वाली पहली कार निर्माता बन गई है। दक्षिणी जर्मनी के कुप्पेनहेम में रीसाइक्लिंग प्लांट एक वास्तविक सर्कुलर अर्थव्यवस्था बनाता है।

मौजूदा स्थापित प्रक्रियाओं के विपरीत, मैकेनिकल-हाइड्रोमेटलर्जिकल रीसाइक्लिंग प्लांट की अपेक्षित रिकवरी दर 96 प्रतिशत से अधिक है। लिथियम, निकल और कोबाल्ट जैसे मूल्यवान और दुर्लभ कच्चे माल को पुनर्प्राप्त किया जा सकता है - एक ऐसे तरीके से जो भविष्य के सभी इलेक्ट्रिक मर्सिडीज-बेंज वाहनों के लिए नई बैटरियों में उपयोग के लिए उपयुक्त है।

कंपनी ने नए बैटरी रिसाइकिलिंग प्लांट के निर्माण और इस प्रकार जर्मनी में मूल्य सृजन में करोड़ों यूरो का निवेश किया है। संघीय चांसलर ओलाफ स्कोल्ज़ और बाडेन-वुर्टेमबर्ग के पर्यावरण मंत्री थेक्ला वाकर ने बाडेन के कुप्पेनहेम में उद्घाटन समारोह के लिए प्लांट का दौरा किया।

"मर्सिडीज-बेंज ने खुद को टिकाऊ तरीके से सबसे वांछनीय कारों के निर्माण का लक्ष्य निर्धारित किया है। ऑटोमोटिव इंजीनियरिंग में अग्रणी के रूप में यूरोप की पहली एकीकृत मैकेनिकल-हाइड्रोमेटलर्जिकल बैटरी रीसाइक्लिंग फैक्ट्री कच्चे माल की स्थिरता को बढ़ाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। उद्योग और विज्ञान के हमारे भागीदारों के साथ, हम जर्मनी और यूरोप में टिकाऊ इलेक्ट्रिक मोबिलिटी और मूल्य निर्माण के लिए अभिनव ताकत का एक मजबूत संकेत भेज रहे हैं,₹ मर्सिडीज-बेंज ग्रुप एजी के प्रबंधन बोर्ड के अध्यक्ष ओला कलेनियस ने कहा।

"ऑटोमोबाइल का भविष्य इलेक्ट्रिक है और बैटरी इसका एक अनिवार्य घटक है। संसाधन-संरक्षण और संधारणीय तरीके से बैटरी का उत्पादन करने के लिए, रीसाइक्लिंग भी महत्वपूर्ण है। सर्कुलर अर्थव्यवस्था एक विकास इंजन है और साथ ही, हमारे जलवायु लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए एक आवश्यक निर्माण खंड है! मैं मर्सिडीज-बेंज को कुप्पेनहेम में इस निवेश द्वारा दिखाए गए साहस और दूरदर्शिता के लिए बधाई देता हूं। जर्मनी नई और अभिनव प्रौद्योगिकियों के लिए एक अत्याधुनिक बाजार बना हुआ है, ₹जर्मनी के संघीय गणराज्य के संघीय चांसलर ओलाफ स्कोल्ज़ ने टिप्पणी की।

बैटरी रीसाइक्लिंग फैक्ट्री के लिए मर्सिडीज-बेंज का प्रौद्योगिकी भागीदार प्राइमोबियस है, जो जर्मन प्लांट और मैकेनिकल इंजीनियरिंग कंपनी एसएमएस ग्रुप और ऑस्ट्रेलियाई प्रक्रिया प्रौद्योगिकी डेवलपर नियोमेटल्स के बीच एक संयुक्त उद्यम है। प्लांट को तीन जर्मन विश्वविद्यालयों के साथ एक वैज्ञानिक अनुसंधान परियोजना के हिस्से के रूप में जर्मन संघीय आर्थिक मामलों और जलवायु कार्रवाई मंत्रालय से धन प्राप्त हो रहा है। यह परियोजना रसद और पुनर्संयोजन अवधारणाओं सहित रीसाइक्लिंग के लिए पूरी प्रक्रिया श्रृंखला को देखती है। इस प्रकार भागीदार जर्मनी में बैटरी रीसाइक्लिंग उद्योग के भविष्य के पैमाने में एक महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं।

मौजूदा स्थापित प्रक्रियाओं के विपरीत मैकेनिकल-हाइड्रोमेटलर्जिकल रीसाइक्लिंग प्लांट की अपेक्षित पुनर्प्राप्ति दर 96 प्रतिशत से अधिक है।

यूरोप में पहली बार मर्सिडीज-बेंज बैटरी रीसाइक्लिंग प्लांट बैटरी मॉड्यूल को काटने से लेकर सक्रिय बैटरी सामग्री को सुखाने और संसाधित करने तक के सभी चरणों को कवर करता है।

क्वांटम एनर्जी दिवाली 2024 के लिए इलेक्ट्रिक स्कूटरों पर दे रही त्योहारी छूट

परिवहन विशेष न्यूज

भारत के इलेक्ट्रिक वाहन उद्योग में उभरती हुई कंपनी क्वांटम एनर्जी ने अपने कुछ लोकप्रिय इलेक्ट्रिक स्कूटर मॉडल पर दिवाली पर विशेष छूट की घोषणा की है। इलेक्ट्रिक मोबिलिटी को बढ़ावा देने के उद्देश्य से सीमित समय के लिए यह ऑफर 18 अक्टूबर 2024 से 31 अक्टूबर 2024 तक चलेगा। यह छूट क्वांटम एनर्जी के सभी शोरूम में उपलब्ध है, जिसमें आगरा, लखनऊ और कानपुर में इसके नए खुले आउटलेट भी शामिल हैं।

यह ऑफर तीन मॉडलों पर लागू है प्लाज्मा एक्स, प्लाज्मा एक्सआर और मिलान। ग्राहक अब त्योहारी सीजन के दौरान इन स्कूटरों को कम कीमत पर खरीद सकते हैं। प्लाज्मा एक्स की कीमत ₹1,29,150 से घटकर ₹99,999 हो जाएगी; प्लाज्मा एक्सआर की कीमत ₹1,09,999 से घटकर ₹89,095 हो जाएगी और मिलान की कीमत ₹85,999 से घटकर ₹79,999 हो जाएगी।

कंपनी ने कहा कि ये मॉडल भारतीय यात्रियों के लिए डिज़ाइन किए गए हैं, जो प्रदर्शन और ऊर्जा दक्षता के बीच संतुलन प्रदान करते हैं। प्लाज्मा एक्स और प्लाज्मा एक्सआर 1500W मोटर द्वारा संचालित हैं, जिनकी अधिकतम गति क्रमशः 65 किमी/घंटा और 60 किमी/घंटा है। 1000W मोटर से लैस मिलान 60 किमी/घंटा की शीर्ष गति तक पहुँचता है। स्कूटर की रेंज भी काफी अच्छी है: प्लाज्मा एक्स के लिए एक बार चार्ज करने पर 120 किमी तक और प्लाज्मा एक्सआर और मिलान के लिए 100 किमी तक।

क्वांटम एनर्जी लिमिटेड की निदेशक चेतना चुक्कापल्ली ने कहा, ₹दिवाली उत्सव का समय है, और क्वांटम एनर्जी में हम अपने ग्राहकों को इन विशेष छूटों के साथ इलेक्ट्रिक मोबिलिटी पर स्विच करने का अवसर प्रदान करने के लिए उत्साहित हैं। हमारे इलेक्ट्रिक स्कूटर प्रदर्शन, विश्वसनीयता और पर्यावरण-मित्रता प्रदान करने के लिए डिज़ाइन किए गए हैं, और हमें उम्मीद है कि ये त्यौहारी ऑफर अधिक लोगों को हरित भविष्य अपनाने के लिए प्रोत्साहित करेंगे।"

कुसालावा इंटरनेशनल की सहायक कंपनी क्वांटम एनर्जी, जो 1964 से प्रमुख मूल उपकरण निर्माताओं (ओईएम) के लिए इंजन घटकों का निर्माण कर रही है, ने 2022 में इलेक्ट्रिक वाहन बाजार में प्रवेश किया। कंपनी ने तब से 10,000 से अधिक इकाइयां बेची हैं और इसे भारत के शीर्ष 10 ईवी दोपहिया ब्रांडों में स्थान दिया गया है।

प्रतिस्पर्धी मूल्य निर्धारण के अलावा, सभी क्वांटम एनर्जी शोरूम बिक्री, सेवा और स्पेयर पार्ट्स सहित सेवाओं की पूरी श्रृंखला प्रदान करते हैं। ग्राहक कंपनी की वेबसाइट के माध्यम से ऑनलाइन टेस्ट राइड शेड्यूल कर सकते हैं या भारत भर में किसी भी शोरूम पर जा सकते हैं।

कंपनी ने कहा कि ये ऑफर अधिक उपभोक्ताओं को इलेक्ट्रिक वाहनों को एक टिकाऊ विकल्प के रूप में देखने के लिए प्रोत्साहित करेंगे, खासकर त्योहारी सीजन के दौरान।

रैपिडो ने भारत भर में 10,000 स्वैपेबल पियाजियो ईवी तैनात करने के लिए इंडोफास्ट एनर्जी के साथ किया सहयोग

परिवहन विशेष न्यूज

रैपिडो ने भारत भर में स्वैपेबल बैटरी वाले 10,000 पियाजियो इलेक्ट्रिक वाहन तैनात करने के लिए इंडियन ऑयल और सन मोबिलिटी के बीच एक संयुक्त उद्यम इंडोफास्ट एनर्जी के साथ सहयोग की घोषणा की है।

इस परियोजना के हिस्से के रूप में इंडोफास्ट एनर्जी ने दिसंबर 2024 के अंत तक हैदराबाद में 100 से अधिक बैटरी स्वैपिंग स्टेशन और बेंगलुरु में 200 से अधिक स्टेशन स्थापित करने की योजना बनाई है। रैपिडो का लक्ष्य इन स्वैपेबल इलेक्ट्रिक ऑटो को अपने बेड़े में शामिल करना है ताकि टिकाऊ गतिशीलता को बढ़ावा दिया जा सके और अपने दैनिक सवारी संचालन के एक हिस्से का समर्थन किया जा सके।

पियाजियो के ई-सिटी मैक्स इलेक्ट्रिक ऑटो, सन मोबिलिटी की बैटरी स्वैपिंग तकनीक के साथ एकीकृत, विस्तारित रेंज और कम डाउनटाइम का लाभ प्रदान करते हैं। इस सहयोग से 2024 के अंत तक हैदराबाद, बेंगलुरु और अन्य प्रमुख शहरों से शुरू होकर पूरे दक्षिण भारत में 1,000 से अधिक ईवी शुरू होने की उम्मीद है।

साझेदारी को पहली बार 2023 में बेंगलुरु, हैदराबाद और दिल्ली में शुरू किया गया था, जिसका उद्देश्य सार्वजनिक परिवहन में इलेक्ट्रिक वाहनों की दक्षता और सुविधा में सुधार करने के लिए इंडोफास्ट एनर्जी की स्वैपेबल बैटरी तकनीक को रैपिडो के प्लेटफॉर्म में एकीकृत करना था।

प्रतिभाशाली बच्चे को समझना

विजय गर्ग

अभिव्यक्ति के हर माध्यम की अपनी चरित्रगत विशेषता होती है। साहित्य में लेखक अदृश्य बिंबों का सृजन करता है, जबकि सिनेमा पूर्णतः दृश्य माध्यम है। इसलिए साहित्य का सिनेमा में रूपांतरण सीधे-सीधे अदृश्य का दृश्यों में रूपांतरण होता है। वह भी कला या मूर्तिकला की तरह एक स्थिर चाक्षुष बिंब भर में नहीं, बल्कि पूर्णतः जीवंत और प्रत्यक्ष नजर आते जीवन के घटनाक्रम में।

एक प्रतिभाशाली बच्चा वह होता है जिसकी बौद्धिक, रचनात्मक, कलात्मक या शैक्षणिक क्षमताएं अपने साथियों से काफी अधिक होती हैं। जबकि ₹प्रतिभाशाली₹ शब्द को उच्च बुद्धि या आईक्यू स्कोर के साथ जोड़ा जा सकता है, इसमें क्षमताओं का एक व्यापक स्पेक्ट्रम शामिल है, जिसमें समस्या-समाधान, रचनात्मकता, नेतृत्व और संगीत, गणित या कला जैसे क्षेत्रों में विशिष्ट प्रतिभाएं शामिल हैं। इन बच्चों को उनकी पूरी क्षमता तक पहुँचने में मदद करने के लिए अक्सर अलग-अलग सीखने के माहौल और संसाधनों की आवश्यकता होती है। प्रतिभाशाली बच्चों के मुख्य लक्षण 1. प्रारंभिक विकासः प्रतिभाशाली बच्चे अपने साथियों की तुलना में विकासात्मक मील के पत्थर तक जल्दी पहुंच जाते हैं। इसमें पुस्तकों में प्रारंभिक रुचि, उन्नत भाषा का उपयोग, या जटिल अवधारणाओं को समझने की बढ़ी हुई क्षमता शामिल हो सकती है। 2. तीव्र जिज्ञासाः प्रतिभाशाली बच्चे अक्सर विशिष्ट विषयों में गहरी रुचि दिखाते हैं। वे जांच-परख, विचारशील प्रश्न पूछ सकते हैं और विषयों को गहराई से जानने की उत्सुकता दिखा सकते हैं।3. उन्नत समस्या-समाधानः ये बच्चे कम उम्र में अधिक आलोचनात्मक और अमूर्त रूप से सोचते हैं। वे असंबंधित प्रतीत होने वाली अवधारणाओं के बीच संबंध बनाने में सक्षम हैं, अक्सर नवीन सोच प्रदर्शित करते हैं। 4. असाधारण स्मृतिः प्रतिभाशाली बच्चे अक्सर सीमित अनुभव के बाद भी जानकारी को जल्दी और सटीक रूप से याद करने की प्रभावशाली क्षमता प्रदर्शित करते हैं। 5. भावनात्मक संवेदनशीलताः कई प्रतिभाशाली बच्चों में सहानुभूति की तीव्र भावना होती है और वे दूसरों की भावनाओं के प्रति अत्यधिक जागरूक हो सकते हैं। यह भावनात्मक संवेदनशीलता उन्हें चिंता या हताशा का अधिक शिकार बना सकती है, खासकर यदि उनका बौद्धिक विकास उनकी भावनात्मक परिपक्वता से अधिक हो।6. ऊर्जा का उच्च स्तरः कई प्रतिभाशाली बच्चे मानसिक और शारीरिक रूप से लगातार सक्रिय रहते हैं। निरंतर बौद्धिक उत्तेजना की आवश्यकता के साथ, उनमें असीमित ऊर्जा हो सकती है। प्रतिभाशाली बच्चों के सामने चुनौतियाँ अपनी उन्नत क्षमताओं के बावजूद, प्रतिभाशाली बच्चों को अक्सर अनोखी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। इनमें शामिल हो सकते हैंः 1. स्कूल में बोरियतः पारंपरिक स्कूल सेटिंग एक प्रतिभाशाली बच्चे की क्षमताओं को चुनौती नहीं दे सकती है, जिससे बोरियत, अलगाव या व्यवहार संबंधी समस्याएं भी हो सकती हैं।

प्रतिभाशाली बच्चे शिक्षा की गति से अछूता महसूस कर सकते हैं और उन्हें अधिक उन्नत या रचनात्मक कार्य की आवश्यकता होती है। 2. पूर्णतावाद और विफलता का डरः कई प्रतिभाशाली बच्चे पूर्णतावाद के साथ संघर्ष करते हैं, हमेशा उच्च स्तर पर प्रदर्शन करने का तीव्र दबाव महसूस करते हैं। इससे चिंता, विलंब या उन कार्यों को करने की अनिच्छा हो सकती है, जिनके बारे में उन्हें लगता है कि वे उत्कृष्ट नहीं हो सकते।3. सामाजिक अलगावः प्रतिभाशाली बच्चों को अपने साथियों से जुड़ना मुश्किल हो सकता है, क्योंकि उनकी रुचियां और बौद्धिक गतिविधियां उनके आयु वर्ग के साथ मेल नहीं खाती हैं। इससे अलगाव या हताशा की भावना पैदा हो सकती है, क्योंकि वे समान विचारधारा वाले व्यक्तियों के साथ दोस्ती चाहते हैं। 4. भावनात्मक संवेदनशीलताः प्रतिभाशाली बच्चे अक्सर जिन तीव्र भावनाओं और सहानुभूति का अनुभव करते हैं, वे उन्हें भावनात्मक उतार-चढ़ाव के प्रति अधिक संवेदनशील बना सकते हैं। उन्हें इन भावनाओं को प्रबंधित करने में संघर्ष करना पड़ सकता है, जिससे मूड में बदलाव या भारीपन की भावना पैदा हो सकती है। प्रतिभाशाली बच्चों का समर्थन करना माता-पिता, शिक्षक और सलाहकार एक प्रतिभाशाली बच्चे की भावनात्मक और बौद्धिक आवश्यकताओं को संबोधित करते हुए उसकी क्षमताओं को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। प्रतिभाशाली बच्चों का समर्थन करने के कुछ तरीके यहां दिए गए हैंः 1. संवर्धन के अवसर प्रदान करेंः प्रतिभाशाली बच्चे विविध सीखने के अनुभवों के संपर्क में आने पर फलते-फूलते हैं। इसमें उन्हें विशेष कार्यक्रमों में नामांकित करना, चुनौतीपूर्ण पहेलियाँ और गतिविधियाँ पेश करना शामिल हो सकता है।या उन्हें उनके ग्रेड स्तर से परे विषयों, जैसे उन्नत विज्ञान या विदेशी भाषाओं से परिचित कराना। 2. भावनात्मक समर्थन प्रदान करेंः खुले संचार को प्रोत्साहित करके और उनकी भावनाओं को मान्य करके प्रतिभाशाली बच्चों को उनकी भावनात्मक संवेदनशीलता को नेविगेट करने में मदद करें। उन्हें सचेतनता या विश्राम तकनीक जैसे मुकाबला तंत्र सिखाना, चिंता या तनाव को प्रबंधित करने में सहायक हो सकता है। 3. रचनात्मकता और अन्वेषण को प्रोत्साहित करेंः प्रतिभाशाली बच्चों को रचनात्मक आउटलेट्स से लाभ होता है जो उन्हें अपनी रुचियों का पता लगाने की अनुमति देते हैं। चाहे वह कला, संगीत, लेखन, या अन्य रचनात्मक गतिविधियों के माध्यम से हो, ऐसे वातावरण को बढ़ावा देना जहां अन्वेषण को प्रोत्साहित किया जाता है, उन्हें बौद्धिक और भावनात्मक रूप से विकसित होने में मदद मिल सकती है। 4. व्यक्तिगत शिक्षण योजनाएं बनाएंः स्कूल में, प्रतिभाशाली बच्चों को व्यक्तिगत शैक्षिक योजनाओं (आईईपी) की आवश्यकता हो सकती है जो उनकी उन्नत क्षमताओं को पूरा करती हैं। इसमें त्वरित कार्यक्रम, प्रतिभाशाली और प्रतिभाशाली कक्षाएं, या विषय-विशिष्ट संवर्धन शामिल हो सकते हैं। 5. सामाजिक कौशल को बढ़ावा देंः प्रतिभाशाली बच्चों को समूह गतिविधियों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करें और उन्हें सामाजिक कौशल विकसित करने में मदद करें जो उन्हें साथियों के साथ जुड़ने में सक्षम बनाता है। ऐसे क्लब, अतिरिक्त पाठ्यचर्या या गतिविधियाँ ढूँढना जहाँ वे समान रुचियों वाले बच्चों से मिल सकें, अलगाव की भावनाओं को कम कर सकते हैं। 6. उन्हें चुनौती दें, लेकिन संतुलन बनाए रखेंः हालांकि बौद्धिक चुनौतियां प्रदान करना महत्वपूर्ण है, लेकिन यह सुनिश्चित करना भी उतना ही आवश्यक है कि प्रतिभाशाली बच्चों के पास आराम, खेल और गैर-शैक्षणिक गतिविधियों के लिए समय हो। उन्हें चुनौती देने और उन्हें खाली समय देने के बीच संतुलन बनाना बर्नआउट को रोकने की कुंजी है। निष्कर्ष प्रतिभाशाली बच्चे अपनी क्षमताओं में उल्लेखनीय होते हैं, लेकिन उनके सामने आने वाली अनूठी चुनौतियों से निपटने में मदद के लिए उन्हें विशेष समर्थन की आवश्यकता होती है। उन्हें बौद्धिक रूप से विकसित होने के अवसर प्रदान करके, साथ ही उनके भावनात्मक और सामाजिक विकास को बढ़ावा देकर, हम इन बच्चों को उनकी पूरी क्षमता तक पहुंचने में मदद कर सकते हैं। उनके दिमाग और दिल दोनों का पोषण करना यह सुनिश्चित करने की कुंजी है कि वे न केवल उत्कृष्टता प्राप्त करें बल्कि अपने जीवन के सभी पहलुओं में आगे बढ़ें।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल शैक्षिक स्तंभकार स्ट्रीट कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब

संपादकीय

आत्म ज्ञान

एक राजा को राज भोगते हुए काफी समय हो गया था । बाल भी सफ़ेद होने लगे थे ।एक दिन उसने अपने दरबार में एक उत्सव रखा और अपने गुरुदेव एवं मित्र देश के राजाओं को भी सादर आमन्त्रित किया । उत्सव को रोचक बनाने के लिए राज्य की सुप्रसिद्ध नर्तकी को भी बुलाया गया ।

राजा ने कुछ स्वर्ण मुद्रायें अपने गुरु जी को भी दीं, ताकि यदि वे चाहें तो नर्तकी के अच्छे गीत व नृत्य पर वे उसे पुरस्कृत कर सकें । सारी रात नृत्य चलता रहा । ब्रह्म मुहूर्त की बेला आयी । नर्तकी ने देखा कि मेरा तबले वाला ऊँघ रहा है, उसको जगाने के लिए नर्तकी ने एक दोहा पढ़ा -

₹बहुत बीती, थोड़ी रही, पल पल गयी बिताय।

एक पल के कारने, क्यों कलंक लग जाय ।₹

अब इस दोहे का अलग-अलग व्यक्तियों ने अपने अनुरुप अलग-अलग अर्थ निकाला ।तबले वाला सतर्क होकर बजाने लगा ।

जब यह बात गुरु जी ने सुनी तो उन्होंने सारी मोहरें उस नर्तकी के सामने फैंक दीं ।

वही दोहा नर्तकी ने फिर पढ़ा तो राजा की लड़की ने अपना नवलखा हार नर्तकी को भेंट कर दिया ।

उसने फिर वही दोहा दोहराया तो राजा के पुत्र युवराज ने अपना मुकट उतारकर नर्तकी को समर्पित कर दिया ।

नर्तकी फिर वही दोहा दोहराने लगी तो राजा ने कहा - ₹बस कर, एक दोहे से तुमने वैश्या होकर भी सबको लूट लिया है ।" जब यह बात राजा के गुरु ने सुनी तो गुरु के नेत्रों में आँसू आ गए और गुरु जी कहने लगे - ₹राजा !इसको तू वैश्या मत कह, ये तो अब मेरी गुरु बन गयी है । इसने मेरी आँखें खोल दी हैं । यह कह रही है कि मैं सारी उम्र संयमपूर्वक भक्ति करता रहा और आखिरी समय में नर्तकी का मुज़रा देखकर अपनी साधना नष्ट करने यहाँ चला आया हूँ, भाई ! मैं तो चला ।₹ यह कहकर गुरु जी तो अपना कमण्डल उठाकर जंगल की ओर चल पड़े ।

राजा की लड़की ने कहा - ₹पिता जी ! मैं जवान हो गयी हूँ । आप आँखें बन्द किए बैठे हैं, मेरी शादी नहीं कर रहे थे और आज रात मैंने आपके महावत के साथ भागकर अपना जीवन बर्बाद कर लेना था । लेकिन इस नर्तकी ने मुझे सुमति दी है कि जल्दबाजी मत कर कभी तो तेरी शादी होगी ही । क्यों अपने पिता को कलंकित करने पर तुली है ?₹

युवराज ने कहा - ₹पिता जी ! आप वृद्ध हो चले हैं, फिर भी मुझे राज नहीं दे रहे थे । मैंने आज रात ही आपके सिपाहियों से मिलकर आपका कत्ल करवा देना था । लेकिन इस नर्तकी ने समझाया कि पगले !आज नहीं तो कल आखिर राज तो तुम्हें ही मिलना है, क्यों अपने पिता के खून का कलंक अपने सिर पर लेता है । धैर्य रख ।₹

जब ये सब बातें राजा ने सुनी तो राजा को भी आत्म ज्ञान हो गया ।राजा के मन में वैराग्य आ गया । राजा ने तुरन्त फैसला लिया - ₹क्यों न मैं अभी युवराज का राजतिलक कर दूँ ।₹ फिर क्या था, उसी समय राजा ने युवराज का राजतिलक किया और अपनी पुत्री को कहा - ₹पुत्री ! दरबार में एक से एक राजकुमार आये हुए हैं ।तुम अपनी इच्छा से किसी भी राजकुमार के गले में वरमाला डालकर पति रुप में चुन सकती हो ।₹ राजकुमारी ने ऐसा ही किया और राजा सब त्याग कर जंगल में गुरु की शरण में चला गया ।

यह सब देखकर नर्तकी ने सोचा - ₹मेरे एक दोहे से इतने लोग सुधर गए, लेकिन मैं क्यूँ नहीं सुधर पायी ?₹ उसी समय नर्तकी में भी वैराग्य आ गया । उसने उसी समय निर्णय लिया कि आज से मैं अपना बुरा धंधा बन्द करती हूँ और कहा कि ₹हे प्रभु ! मेरे पापों से मुझे क्षमा करना । बस, आज से मैं सिर्फ तेरा नाम सुमिरन करुँगी ।₹

समझ आने की बात है, दुनिया बदलते देर नहीं लगती ।एक दोहे की दो लाईनों से भी हृदय परिवर्तन हो सकता है ।बस, केवल थोड़ा धैर्य रखकर चिन्तन करने की आवश्यकता है ।

प्रशंसा से पिघलना नहीं चाहिए, आलोचना से उबलना नहीं चाहिए । निःस्वार्थ भाव से कर्म करते रहें ।क्योंकि इस धरा का, इस धरा पर, सब धरा रह जायेगा

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल शैक्षिक स्तंभकार स्ट्रीट कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब

महान खगोलशास्त्री एरिस्टार्चस की जीवनी

विजय गर्ग

समोस के अरिस्टार्चस एक यूनानी खगोलशास्त्री थे जिनका मानना था कि पृथ्वी अपनी धुरी पर घूमती है और सूर्य के चारों ओर घूमती है। उनका जन्म लगभग 310 ईसा पूर्व हुआ था और उनकी मृत्यु लगभग 230 ईसा पूर्व हुई थी। इस आधार पर, क्लिंथेस द स्टोइक ने अगेंस्ट एरिस्टार्चस में घोषणा की कि एरिस्टार्चस पर ₹ब्रह्मांड के चूल्हे को चालू करने के लिए₹ अपवित्रता का आरोप लगाया जाना चाहिए। हालाँकि पृथ्वी की गति पर एरिस्टार्चस का काम नष्ट हो गया है, लेकिन उसके विचारों को ग्रीक गणितज्ञ आर्किमिडीज़, ग्रीक लेखक प्लूटार्क और ग्रीक दार्शनिक सेक्स्टस एम्पिरिकस के संकेतों के कारण संरक्षित किया गया है।

आर्किमिडीज़ ने अपने सैंड-रेकनर में कहा कि अरिस्टार्चस ने एक नया सिद्धांत प्रस्तावित किया था, जो यदि सच है, तो ब्रह्मांड का अब तक जितना सोचा गया था उससे कहीं अधिक विस्तार होगा। (जब तक तारे बहुत दूर न हों, गतिमान पृथ्वी को स्थिर तारों की स्पष्ट स्थिति में लंबन, या वार्षिक परिवर्तन का कारण बनना चाहिए।) एरिस्टार्चस का अर्थ चंद्रमा पर सबसे चमकीला गठन चंद्रमा के पूर्वोत्तर चतुर्थांश में लगभग 37 किलोमीटर व्यास वाला एक गड्ढा है। एरिस्टार्चस डिस्कवरी अरिस्टार्चस का मौजूदा काम, सूर्य और चंद्रमा के आकार और दूरी पर, भूकेंद्रिक दृष्टिकोण को संरक्षित करता है, सबसे अधिक संभावना है क्योंकि उन्होंने अभी तक हेलियोसेंट्रिक मॉडल की कल्पना नहीं की थी, जैसा कि विद्वान थॉमस हीथ सुझाव देते हैं। अरिस्टार्चस ने माना कि चंद्रमा प्रकाश नहीं डालता बल्कि उसे परावर्तित करता है, और तर्क दिया कि जब चंद्रमा आधा प्रकाशित होता है (रोशनी द्वारा सुझाया गया कोण) तो सूर्य और चंद्रमा के बीच के कोण को मापकर, कोई अपनी दूरी निर्धारित कर सकता है। उन्होंने कोण की गणना 87 डिग्री की, जो आश्चर्यजनक रूप से आज के 89 डिग्री के वास्तविक कोण के करीब है और उनकी गणना के आधार पर, सूर्य चंद्रमा की तुलना में पृथ्वी से 20 गुना अधिक दूर था (वास्तव में यह 400 गुना अधिक दूर है)। यह स्पष्ट नहीं है कि इस कार्य ने उनके (कथित) बाद के हेलियोसेंट्रिक ब्रह्मांड मॉडल को कैसे सूचित किया, लेकिन यह संभव है कि पृथ्वी से सूर्य और चंद्रमा की दूरी पर उनके शोध ने उन्हें आश्वस्त किया कि सूर्य को अन्य सभी ग्रहों के केंद्र में होना चाहिए।

एरिस्टार्चस का मॉडल केवल आर्किमिडीज़ के द सैंड रेकनर की एक पंक्ति में ही जीवित रहा, जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है। आर्किमिडीज़ जानना चाहते थे कि ब्रह्मांड में रेत के कितने कण भर जाएंगे और इसकी गणना करने के लिए उन्हें ब्रह्मांड के आकार को जानने की आवश्यकता थी। अपनी गणनाओं को दोहराते हुए, उन्होंने अरिस्टार्चस का संदर्भ दिया, जिन्होंने सोचा था कि ब्रह्मांड आर्किमिडीज़ के समकालीनों की सोच से कहीं अधिक बड़ा है: किंग गेलोन

जानते हैं कि अधिकांश खगोलशास्त्री उस गोले को ₹ब्रह्मांड₹ कहते हैं जिसका केंद्र पृथ्वी का केंद्र है और जिसकी त्रिज्या सूर्य के केंद्र और पृथ्वी के केंद्र के बीच की सीधी रेखा के बराबर है। जैसा कि आपने खगोलविदों से सुना होगा, यह सबसे प्रचलित वृत्तांत है। हालाँकि, एरिस्टार्चस ने कुछ सिद्धांतों वाली एक पुस्तक प्रकाशित की है, जिसमें की गई धारणाओं के परिणामस्वरूप यह प्रतीत होता है कि ब्रह्मांड अभी बताए गए 'ब्रह्मांड' से कई गुना बड़ा है। उनके सिद्धांत हैं कि स्थिर तारे और सूर्य गतिहीन रहते हैं, कि पृथ्वी एक वृत्त की परिधि पर सूर्य के चारों ओर घूमती है, सूर्य कक्षा के केंद्र में है, और स्थिर तारों का क्षेत्र, एक ही केंद्र पर केंद्रित है। जैसे कि सूर्य, इतना बड़ा है कि जिस वृत्त में पृथ्वी घूमती है वह स्थिर तारों की दूरी के समान अनुपात रखता है क्योंकि गोले का केंद्र उसकी सतह से दूरी रखता है। एरिस्टार्चस का सिद्धांत है कि चंद्रमा और सूर्य के व्यास पृथ्वी से उनकी दूरी के समानुपाती होने चाहिएसमान रूप से तर्कसंगत, लेकिन इसके गलत परिणाम निकले।

वैज्ञानिकों ने उसकी प्रतिभा और विज्ञान के प्रति प्रतिबद्धता के कारण चंद्रमा पर एक क्रेटर का नाम एरिस्टार्चस के नाम पर रखा है। तथ्य उनके समय के कई दार्शनिक और उनके बाद आने वाले लोग अरिस्टार्चस से प्रभावित थे, जिनमें शामिल हैंः आर्किमिडीज़ के अनुसार, एरिस्टार्चस का मानना था कि दुनिया का यूनानी क्षेत्र उस समय आमतौर पर जितना सोचा जाता था उससे कई गुना बड़ा है। असल में, एरिस्टार्चस को लगा कि यह गोला पृथ्वी के कब्जे वाले गोले से बहुत बड़ा है अल्मागेस्ट के लेखक टॉलेमी ने सितारों और ग्रहों के बारे में अरस्तू के विचार को साझा किया, जो पृथ्वी की परिक्रमा करने वाले क्रिस्टलीय क्षेत्रों से जुड़े हुए थे। दूसरी ओर, टॉलेमी बड़े क्षेत्रों के भीतर काम करने वाले छोटे क्षेत्रों, जिन्हें एपिसाइकिल कहते हैं, का विचार लेकर आए। हालाँकि, महाकाव्य मंगल जैसे ग्रहों की कुछ अजीब गतिविधियों की व्याख्या करने में असमर्थ थे, हालाँकि अरिस्टार्चस के सूर्यकेन्द्रित सिद्धांत ऐसा कर सकते थे। निकोलस कोपरनिकस को ब्रह्मांड की पहली सूर्यकेन्द्रित परिकल्पना को प्रस्तावित करने का श्रेय दिया जाता है। दूसरी ओर, एरिस्टार्चस के कई प्राचीन संकेतों से पता चलता है कि कॉपरनिकस से 1700 साल पहले, उसने पहले ही सूर्य-केंद्रित प्रणाली की कल्पना कर ली थी। इस तथ्य के बावजूद कि कोपरनिकस ने अरिस्टार्चस को अपनी प्रेरणा का श्रेय दिया, दोनों विचारक एक गतिशील पृथ्वी के बारे में अपने ज्ञान में अद्वितीय थे, जो अवलोकन के प्रति सहज था और इसलिए इसे वैज्ञानिक समाज तक पहुंचाना असंभव था। निष्कर्ष एरिस्टार्चस सूर्य, चंद्रमा और पृथ्वी के सापेक्ष आकार की गणना करने वाले पहले खगोलविदों में से एक था। उन्होंने चंद्र ग्रहण के दौरान चंद्रमा को देखकर और पृथ्वी के झुकाव और आकार की गणना करके इसे पूरा किया। चंद्रमा की अंतिम और पहली तिमाही के दौरान, सूर्य, चंद्रमा और पृथ्वी लगभग पूर्ण कोण बनाते हैं। इसके आधार पर उन्होंने गणना की कि सूर्य पृथ्वी से चंद्रमा की तुलना में उन्नीस गुना अधिक दूर है। हालाँकि, उन्होंने एक गणना त्रुटि कीः उन्होंने कोण की गणना 87 डिग्री के रूप में की जबकि सटीक कोण 89° 50′ है। परिणामस्वरूप, अरिस्टार्चस द्वारा प्रस्तावित उन्नीस बार के बजाय, वास्तविक दूरी 390 गुना है। इस तथ्य के बावजूद कि ज्यामितीय सिद्धांत आज तक है, तर्क की कमी के बजाय सटीक उपकरणों की कमी के कारण गणना गलत थी।

विचार से व्यक्तित्व

विजय गर्ग

इंसानी शरीर को रसायन शास्त्र की एक अनूठी प्रणाली कह सकते हैं। यह रसायन विज्ञान इंसान के विचार और नजरिए के आधार पर निर्धारित करता है कि कौन जीवन में मिठास और अमृत का अनुभव करेगा और कौन कड़वाहट या विष का। जो लोग सकारात्मक विचारधारा के होते हैं, उनका अपने और दूसरों के जीवन के प्रति भी दृष्टिकोण अच्छा और खुशियों से भरा होता है । जब कोई सकारात्मक कार्यों से जुड़ता है, जैसे दूसरों की खुशी में जश्न मनाना, समाज के हित में कार्य करना, दूसरों की भावनाओं को सम्मान देना, स्वयं से पहले दूसरों के प्रति फिक्रमंद होना और खयाल रखना, और हर तरह के सकारात्मक विचारों को बढ़ावा देना, तब शरीर का रसायन खुद ही सद्भाव की ओर स्थानांतरित हो जाता है । यह सकारात्मक परिवर्तन न केवल भौतिक शरीर का रखरखाव और मरम्मत करता है, बल्कि दीर्घायु, दर्द रहित जीवन, आनंद और तमाम अन्य लाभकारी नतीजों को भी बढ़ावा देता है।

इसमें संदेह नहीं कि प्रेम, दया और करुणा की मानसिकता इंसान की जिंदगी में एक प्रकार का उपचार प्रभाव पैदा करती है। इनसे हमारी अपनी भलाई पनपती और बढ़ती है। हालांकि जब-जब हमारे जेहन में लालच, क्रोध, ईर्ष्या या सत्ता की लालसा जैसे नकारात्मक विचार छाते हैं, तब-तब हमारे शरीर का रसायन विषाक्त हो जाता है। बेशक हम अच्छे या बुरे कर्मों में शामिल हों या न हों, लेकिन ऐसी नकारात्मक भावनाएं हमारे भीतर अशांति और फिर आंतरिक विष उत्पन्न करते हैं । इनके चलते दुख, चिंता, निराशा, झगड़ा, विवाद, बीमारी और अवसाद होता है । ऐसी विनाशकारी सोच हमारी शांति भंग कर देती है। साथ-साथ असंतुलन और पीड़ा में घसीट ले जाती है। तय है कि हमारे शरीर का रसायन हमारे दिमाग से संचालित होता है। जब हम सकारात्मकता, दयालुता और आत्म- नियंत्रण चुनते हैं, तो हम संपूर्ण और आनंदमय जीवन विकसित करते हैं। ईश्वर या प्रकृति ने भी इंसान को जीवन के उच्च उद्देश्य की पूर्ति के लिए केवल सकारात्मक विचार बनाए रखने के लिए नियुक्त किया है। इस दिव्य मार्गदर्शन को अपनाने से यह सुनिश्चित होता है कि हम अपने वास्तविक उद्देश्य के अनुरूप जीवन जी रहे हैं और इसके साथ-साथ इच्छित जीवन की परिपूर्णता का अनुभव कर रहे हैं।

इसीलिए कहते हैं कि खुद से लड़ना सबसे कठिन लड़ाई होती है। हमारा सबसे बड़ा दुश्मन स्वयं का मन है। विचारों की अनंत धारा में हम कभी-कभी खुद को खो देते हैं । नकारात्मक विचार हमें कमजोर करते हैं, हमारे सकारात्मक विचारों पर हावी हो जातेहैं और हम खुद से ही लड़ते रह जाते हैं । ऐसे अंतर युद्ध या द्वंद्व का अंत तभी हो सकता है, जब हम अपने विचारों को छांटें और उन्हें सही दिशा में मोड़ें। अपने अंदर की लड़ाई से बाहर निकलने का एकमात्र तरीका है कि अपने विचारों को सकारात्मक बनाया जाए। हमें खुद पर विश्वास करना चाहिए और यह मानना चाहिए कि हमारे जीवन चक्र में किसी दूसरे से ज्यादा बनाने - बिगाड़ने में खुद का कसूर ही है, दूसरे का शून्य भी है। जीवन की हर समस्या का हल इंसान ढूंढ़ सकता है। अपने विचारों को दूषित होने से बचाना सीखना चाहिए और नकारात्मकता को अपने जीवन से बाहर करना चाहिए ।

दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि जैसे लोहे का कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता, सिवा उसके अपने जंग के, वैसे ही, किसी इंसान का कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता, लेकिन उसकी अपनी सोच ही उसे बिगाड़ सकती है। विख्यात ब्रिटिश दार्शनिक फ्रांसिस बेकन की राय में, इंसान अपने स्वभाव के मुताबिक सोचता है, कायदे के मुताबिक बोलता है और रिवाज के मुताबिक व्यवहार करता है। एक सकारात्मक दृष्टिकोण से आशावादी सोच का जन्म होता है। जब हमारी मानसिकता सकारात्मक होती है, तब हम रचनात्मक रवैया रखते हैं। अपने साथ- साथ दूसरों की भी मदद करते हैं। सकारात्मक सोच से प्रोत्साहन मिलता है और पुष्टीकरण की मदद से लक्ष्य प्राप्ति अवश्यंभावी है। एक कर्मठ कार्यकर्ता अपने आप ही एक बेहतर और सफल भविष्य के प्रति निश्चित रहता है।

कोई जैसा सोचता है, जैसे विचार रखता है, वैसा ही बन जाता है। उसी दिशा में आगे बढ़ते जाते हैं, वैसे ही कार्य करते चले जाते हैं, क्योंकि विचार रूपी ताकत इंसान को उसी दिशा में अग्रसारित करती है,

जिस दिशा की ओर विचार पनप रहे हैं। मसलन, अगर किसी को डाक्टर या शिक्षक बनना है, तो वह उसी की तैयारी करता है। और एक न एक दिन अपनी तन्मयता के साथ उसे हासिल कर लेता है । सोच में दृढ़ता होना लाजिमी है, तभी वैसा बन पाते हैं। रामायण की चौपाई है - 'जाकी रही भावना जैसी प्रभु मूरत देखी तिन तैसी'। यानी जैसी भावना या सोच है, उसी प्रकार प्रभु उसे दर्शन देते हैं। जैसा सोचा जाएगा, वैसा ही बन जाओगे। केवल विचार ही नहीं, खान-पान की शुद्धता - पवित्रता भी अच्छाइयों से लबालब करने का बराबर दमखम रखती है। इसीलिए हम अक्सर बड़े-बुजुर्गों को कहते सुन सकते हैं कि सात्विक भोजन खाने और पेय पीने वालों के विचार भी दूषित नहीं रहते। यानी जैसा खाएंगे अन्न, वैसा होगा मन । और जैसे पिएंगे पानी, वैसी होगी वाणी भी । किसी ने इस हद तक कहा है कि 'शब्द' का भी अपना एक 'स्वाद' है, बोलने से पहले स्वयं 'चख' लीजिए। अगर खुद को 'अच्छा' नहीं लगे, तो दूसरों को मत परोसिए। इसीलिए खानपान और विचार से लेकर बोलचाल तक अच्छा बनना जरूरी है।

दीवाली से पहले सोने और चांदी ने बनाया नया रिकॉर्ड, चेक करें लेटेस्ट प्राइस

परिवहन विशेष न्यूज

सोने और चांदी की कीमतों में लगातार छठे कारोबारी सत्र में तेजी आई। दोनों ने अपना नया ऑल-टाइम हाई बनाया है। चांदी का भाव लगातार दूसरे कारोबारी सत्र में 1 लाख के पार रहा। त्योहारी और शादी-ब्याह के मौसम की मांग के चलते सोने और चांदी की कीमतों में तेजी आई है। एक्सपर्ट के मुताबिक आने वाले दिनों में भी सोने-चांदी की कीमतों में तेजी बनी रह सकती है।

नई दिल्ली। सोने और चांदी की कीमतों में रिकॉर्ड तेजी का सिलसिला बरकरार रहा है। दोनों कीमती धातुओं का भाव लगातार छठे कारोबारी सत्र बढ़ा है। सोने की कीमत 500 रुपये बढ़कर 81,500 रुपये प्रति 10 ग्राम के सर्वकालिक उच्च स्तर पर पहुंच गई। वहीं, चांदी 1,000 रुपये बढ़कर 1.02 लाख रुपये प्रति किलोग्राम हो गई।

चांदी का भी यह अब तक का रिकॉर्ड स्तर है। पिछले छह कारोबारी सत्रों में चांदी का भाव 10,000 रुपये प्रति किलोग्राम बढ़ गया है। वहीं, 16 अक्टूबर से सोने में 2,850 रुपये प्रति 10 ग्राम की तेजी आई है।

क्यों बढ़ रहा सोने-चांदी का भाव

अखिल भारतीय सर्राफा संघ के अनुसार, त्योहारी और शादी-ब्याह के मौसम की मांग के चलते सोने और चांदी की कीमतों में तेजी आई है। एसकेआई कैपिटल के एमडी नरिंदर वाधवा के मुताबिक, फिजिकल मार्केट और एमसीएक्स पर चांदी के 1 लाख रुपये तक पहुंचने कई कारण हैं। इनमें भारत में सीजनल डिमांड और पश्चिम एशिया संघर्ष से भू-राजनीतिक जोखिम जैसे चीजें शामिल हैं।

सरकार ने जुलाई में, सोने और अन्य धातुओं पर मूल सीमा शुल्क में कटौती की थी। उसके बाद स्थानीय बाजारों में सोने और चांदी की कीमतों में 7 प्रतिशत की तेज गिरावट आई थी। हालांकि, मौजूदा फेस्टिव सीजन, अमेरिका में ब्याज दरों में कटौती की उम्मीद और भू-राजनीतिक तनाव बढ़ने जैसे फैक्टर ने सोने और चांदी की कीमतों को दोबारा हवा दी है।

क्या है एक्सपर्ट की राय

एलकेपी सिक्योरिटीज में कमोडिटी और करेंसी के वीपी रिसर्च एनालिस्ट जतिन त्रिवेदी ने

कहा, ₹फिलहाल, ब्याज दर का चक्र सोने में तेजी की सबसे बड़ी वजह है। साथ ही, आगामी अमेरिकी राष्ट्रपति चुनावों के नतीजों को लेकर अनिश्चितता भी सोने की कीमतों को ऊंचा रखने में भूमिका निभा रही है।'

एचडीएफसी सिक्योरिटीज में कमोडिटीज के वरिष्ठ विश्लेषक सौमिल गांधी ने कहा, ₹निवेशक अस्थिरता के माहौल में गोल्ड का रुख कर रहे हैं। वहीं, मध्य पूर्व में तनाव के और बढ़ने की आशंका भी व्यापारियों को सोने की ओर खींच रही है। इससे सोने के भाव में तेजी आ रही है।₹

मेहता इक्विटीज लिमिटेड में कमोडिटीज के उपाध्यक्ष राहुल कलंत्री ने कहा, ₹सोने और चांदी ने काफी मजबूत प्रदर्शन किया है। सोने की कीमतें नई ऊंचाई पर पहुंच गई हैं, जबकि चांदी 35 अमेरिकी डॉलर प्रति औंस पर 12 साल के नए उच्च स्तर पर पहुंच गई है।' हालांकि, एशियाई बाजार में चांदी 0.86 प्रतिशत गिरकर 34.74 अमेरिकी डॉलर प्रति औंस पर बोली गई। दिन के दौरान इसने 35.055 अमेरिकी डॉलर प्रति औंस का नया शिखर छुआ।

जन धन योजना से जन-निवेश : क्या भारतीय म्यूचुअल फंड इंडस्ट्री में बदलाव

आज म्यूचुअल फंड के निवेशकों की संख्या में शानदार तेजी देखने को मिली है। निवेशक धड़ाधड़ इसमें निवेश कर रहे थे। केंद्र सरकार द्वारा शुरू की गई जन-धन योजना से बैंकिंग सिस्टम को लाभ हुआ। वहीं दूसरी तरफ यह योजना म्यूचुअल फंड इंडस्ट्री के लिए चुनौती बन गया। ऐसे में सवाल है कि क्या अब म्यूचुअल फंड इंडस्ट्री में बदलाव की जरूरत है?

नई दिल्ली। साल 1995 में, एसोसिएशन ऑफ म्यूचुअल फंड ऑफ इंडिया (भारतीय म्यूचुअल फंड एसोसिएशन) बनाने के लिए कुछ पब्लिक सेक्टर और प्राइवेट सेक्टर म्यूचुअल फंड्स (एमएफ) के चीफ एग्जीक्यूटिव ऑफिसर एक साथ आए।

यह एसोसिएशन बनाने के पीछे उद्देश्य उन निवेशकों को आकर्षित करने का था, जिनकी सोच प्रॉपर्टी, गोल्ड या बैंक डिपॉजिट से आगे नहीं बढ़ पाती थी या इससे अलग उन्होंने कुछ नहीं नहीं देखा था। हालांकि, इसके बाद भी कई दशकों तक म्यूचुअल फंड के मजबूत प्रदर्शन के बावजूद, भारतीय निवेशकों ने इसे काफी हद तक नजरअंदाज कर दिया।

साल 2014 तक, म्यूचुअल फंड (एमएफ) भारतीय परिवारों के फाइनेंशियल एसेट्स का 5 फीसदी से भी कम प्रतिनिधित्व करते थे।

लेकिन साल 2024 तक तेजी से आगे बढ़ते हुए स्थिति पूरी तरह बदल गई है। आरबीआई गवर्नर सहित कई लोगों ने हाल ही में म्यूचुअल फंड और शेयर बाजार के बारे में चिंता जताई है, जिनमें भारी संख्या में भारतीय निवेशक पैसा लगा रहे हैं, जिससे बैंकों की डिपॉजिट ग्रोथ सुस्त पड़ गई है। पिछले दशक में म्यूचुअल फंड इंडस्ट्री 6 गुना बढ़ गई है और अब यह बैंक डिपॉजिट के 30 फीसदी के बराबर है।

आखिर इस ग्रोथ को किसने संचालित किया है? जबकि पिछली पीढ़ी के निवेशकों ने मुख्य रूप से अपनी जमा पूंजी को पूरी तरह से सुरक्षित रखने पर फोकस किया था और पीपीएफ और बैंक डिपॉजिट जैसे कन्जर्वेटिव कहे जाने वाले निवेश के विकल्पों को चुना था, वहीं आज का युवा अपने निवेश पर अधिक रिटर्न चाहता है। भारत में, निवेशक अब अपनी लाइफ स्टाइल को फाइनेंस करने और अपने जीवन के तमाम लक्ष्य को पूरा करने में मदद के लिए अपनी बचत में 'कुछ ज्यादा' की तलाश कर रहे हैं।

पिछले 2 दशक में, ज्यादातर इक्विटी फंड ने निवेशकों की संपत्ति में 15-20 गुना बढ़ोतरी की है, जो कि बैंक डिपॉजिट जैसे पारंपरिक निवेश के विकल्प में हासिल किए गए रिटर्न की गई तुलना में लगभग 4-5 गुना अधिक है। निवेशकों के लिए जागरूकता अभियान ₹म्यूचुअल फंड सही है₹ के साथ मिलकर यह सुनिश्चित किया गया कि अधिक से अधिक निवेशक इस नए एसेट क्लास के बारे में समझें और इसे लेकर जागरूक हो जाएं, जिसे उन्होंने लंबे समय तक नजरअंदाज कर दिया था।

हालांकि, म्यूचुअल फंड अब तक सिर्फ 5 करोड़ निवेशकों तक ही पहुंच पाए हैं, यानी इसकी पहुंच आबादी के करीब 3 फीसदी लोगों तक ही है। अब तक 10 में से एक भी बैंक अकाउंट होल्डर ने म्यूचुअल फंड प्रोडक्ट में निवेश नहीं किया है। इसके अलावा म्यूचुअल फंड एसेट अंडर मैनेजमेंट (AUM) का दो तिहाई हिस्सा टॉप 15 शहरों से आता है, जो यह संकेत देता है कि अभी म्यूचुअल फंड की पहुंच बहुत कम क्षेत्रों व लोगों तक है। इंडस्ट्री की शुरुआत तो मजबूत हुई है, लेकिन अभी लंबा रास्ता तय करना बाकी है।

अब महंगाई की होगी छुट्टी! प्याज के बाद सस्ते में साबुत चना और मसूर दाल भी बेचेगी सरकार

परिवहन विशेष न्यूज

केंद्र सरकार ने भारत ब्रांड के तहत सस्ते दाम में साबुत चना और मसूर दालबेचने का फैसला किया है। इससे उम्मीद है कि दालों की कीमतों में नरमी आएगी और त्योहारी सीजन में आम जनता को राहत मिलेगी। भारतीय राष्ट्रीय कृषि सहकारी विपणन संघ लिमिटेड (नेफेड) और केन्द्रीय भंडार के जरिये साबुत चना 58 रुपये प्रति किलोग्राम और मसूर दाल 89 रुपये प्रति किलोग्राम की दर से बेचा जाएगा।

नई दिल्ली। **पिछले** कई महीनों से जनता महंगाई की मार से परेशान है। खासकर, खाद्य महंगाई ने उसके रसोई का बजट बिगाड़ रखा है। आलू, टमाटर और प्याज के साथ दालों के भाव भी काफी बढ़ गए हैं। अब सरकार ने त्योहारी सीजन में महंगाई पर अंकुश लगाने के लिए 'भारत' ब्रांड के तहत साबुत चना और मसूर दाल भी बेचने का फैसला किया है। वह दिल्ली-एनसीआर जैसी जगहों पर रियायती दामों पर पहले ही प्याज बेच रही है।

केंद्र सरकार ने बुधवार को सब्सिडी वाली दालों के अपने कार्यक्रम के विस्तार का एलान किया। खाद्य एवं उपभोक्ता मामलों के मंत्री प्रल्हाद जोशी का कहना है कि सहकारी नेटवर्क भारतीय राष्ट्रीय सहकारी उपभोक्ता संघ लिमिटेड (एनसीसीएफ), भारतीय राष्ट्रीय कृषि सहकारी विपणन संघ लिमिटेड (नेफेड) और केन्द्रीय भंडार के जरिये साबुत चना 58 रुपये प्रति किलोग्राम और मसूर दाल 89 रुपये प्रति किलोग्राम की दर से बेचा जाएगा।

दालों का उत्पादन बढ़ने की उम्मीद

सरकार ने सहकारी समितियों को तीन लाख टन चना और 68,000 टन मूंग आवंटित किया है। एनसीसीएफ की प्रबंध निदेशक अनीस जोसेफ चंद्रा ने कहा कि वितरण दिल्ली, राजस्थान, गुजरात और महाराष्ट्र से शुरू होगा। 10 दिन के भीतर इसके देशव्यापी विस्तार की योजना है। प्रथम चरण के अंतर्गत वर्तमान दरें गेहूं के आटे के लिए 30 रुपये प्रति किलोग्राम (27.50 रुपये से ऊपर), चावल के लिए 34 रुपये प्रति किलोग्राम (29 रुपये से अधिक), चना दाल के लिए 70 रुपये प्रति किलोग्राम (60 रुपये से ऊपर) हैं।

वहीं मूंग दाल तथा मूंग साबुत की कीमत क्रमशः 107 रुपये प्रति किलोग्राम और 93 रुपये प्रति किलोग्राम है। सरकार प्याज के लिए 35 रुपये प्रति किलोग्राम और टमाटर के लिए 65 रुपये प्रति किलोग्राम की दर बनाए रखने की भी कोशिश कर रही है। केंद्रीय मंत्री ने इस वर्ष दालों के बेहतर उत्पादन की उम्मीद जताई है क्योंकि सरकार ने दालों के समर्थन मूल्य में काफी वृद्धि की है।

सस्ती प्याज भी बेच रही सरकार

सरकार ने त्योहारी सीजन के दौरान प्याज की बढ़ती कीमतों को नियंत्रित करने के लिए सस्ता प्याज भी बेच रही है। वह महाराष्ट्र से दिल्ली तक रेलवे के जरिए 1,600 टन बफर स्टॉक लाई। यह पहली दफा है, जब सरकार रसोई के लिए रेलवे ट्रांसपोर्टेशन का इस्तेमाल किया है। यह प्याज 27-28 रुपये से लेकर 35-36 रुपये प्रति किलो बेची गई, जबकि कुछ इलाकों में प्याज का खुदरा मूल्य 70 रुपये तक पहुंच गया था।

बारिश की वजह से आंध्र प्रदेश और कर्नाटक में प्याज की फसल को भारी नुकसान पहुंचा। इसके चलते कुछ दिनों से बाजार में प्याज के दाम लगातार बढ़ रहे थे। हालांकि, सरकार के दखल के बाद अब प्याज के भाव स्थिर होने की उम्मीद जताई जा रही है।

इस फेस्टिव सीजन सोने-चांदी के अलावा ये शानदार ऑप्शन भी मौजूद, आपके लिए कौन-सा रहेगा बेहतर?

परिवहन विशेष न्यूज

फेस्टिवल सीजन में ज्वैलरी की डिमांड बढ़ जाती है। अब गोल्ड और सिल्वर के अलावा अब रोज गोल्ड और व्हाइट गोल्ड भी अच्छा ऑप्शन हो गया है। वैसे तो यह गोल्ड से महंगा होता है। हम आपको इस आर्टिकल में बताएंगे कि व्हाइट गोल्ड और रोज गोल्ड में क्या अंतर है और आपके लिए कौन-सा बेहतर ऑप्शन रहेगा।

नई दिल्ली। फेस्टिवल सीजन में ज्वेलरी खरीदना लोगों को पसंद आती है। दरअसल, भारत में ज्वेलरी की खरीदारी काफी शुभ मानी जाती है। इसके अलावा महिलाओं को ज्वेलरी की शॉपिंग करना काफी पसंद है। ज्वेलरी शॉपिंग की बात आती है तो हमारे ध्यान में गोल्ड, सिल्वर और डायमंड आता है। इसके अलावा भी अब दो मेटल काफी पॉपुलर हो रहे हैं। हम बात कर रहे हैं व्हाइट गोल्ड (White Gold) और रोज गोल्ड (Rose Gold) की। इन दोनों गोल्ड को काफी लग्जरी, एस्थेटिक माना जाता है।

कई लोग इन दोनों गोल्ड को लेकर काफी कन्फ्यूज होते हैं। हम आपको इन दोनों के अंतर के साथ बताएंगे कि आपके लिए कौन-सा बेहतर ऑप्शन रहने वाला है।

सामान्य गोल्ड से कितने अलग हैं दोनों

गोल्ड के कई भी कई प्रकार होते हैं। जो सामान्य सुनार के पास गोल्ड मिलता है वो प्योर गोल्ड होता है। जी हां, हालांकि इसमें भी मिलावट करने के बाद ही ज्वैलरी तैयार की जाती है। वहीं, जो रोज गोल्ड और व्हाइट गोल्ड होता है उसमें भी सोने के साथ मिलावट की जाती है। इसमें कई ऐसी कई कीमती धातु को मिलाया जाता है, जिसके बाद यह इस रंग का बनता है।

यह दोनों एक दूसरे से काफी अलग होते हैं। इसके रंग के अलावा इसमें मिलाने वाले धातु भी अलग होते हैं। यह सामान्य सुनार की दुकान पर उपलब्ध नहीं होता है। इसकी वजह है कि यह काफी लग्जरी और एसथेटिक होता है। कई लोग इसकी सादगी और रंग की वजह से पसंद करते हैं तो वहीं कई इसकी कीमत की वजह से इसे पसंद करते हैं। अगर आप भी इन दोनों में से कुछ खरीदने का सोच रहे हैं तो आपको एक बार देख लेना चाहिए कि आपके लिए इनमें से कौन-सा बेहतर है।

रोज गोल्ड क्या होता है

रोज गोल्ड के नाम से ही समझ आता है कि इसका रंग गुलाब जैसे हल्का पिंक होगा। इसमें 75 फीसदी शुद्ध सोना होता है। इस गोल्ड में जो गुलाबी रंग आता है वह गोल्ड के साथ कॉपर और सिल्वर की मिलावट करने की वजह से आता है। जब गोल्ड में कॉपर मिलाया जाता है तो यह एक तरह से गुलाबी रंग का इफेक्ट देता है। इसके अलावा यह ज्वैलरी को डिजाइन करने में भी मदद करता है। अगर इसमें ज्यादा कॉपर मिला दिया जाए तो गोल्ड का रंग डार्क पिंक हो जाएगा।

अब रोज गोल्ड में कलर हल्का हो या फिर डार्क इस बात पर निर्भर करता है कि डिजाइनर को कैसा कलर चाहिए।

वाइट गोल्ड क्या होता है

व्हाइट गोल्ड में भी प्योर गोल्ड को मिलाया जाता है। इसमें गोल्ड के साथ Alladium, Nickel और Manganese जैसे मेटल मिलाए जाते हैं। इस गोल्ड में जो रैडिएंट ग्लो आता है वह Rhodium की प्लेटिंग के कारण आता है। इसके अलावा व्हाइट गोल्ड बेहद टिकाऊ मानी जाती है। यह धातु सिल्वर और प्लेटिनम को रिप्रजेंट करती है। यह एक तरह का कीमती रत्न जैसी लगती है।

व्हाइट गोल्ड का इस्तेमाल डायमंड के साथ किया जाता है। यह सगाई की अंगूठी या फिर डायमेंड बेस्ड ज्वैलरी में अधिक किया जाता है। बता दें कि व्हाइट गोल्ड का निर्माण कुछ सालों पहले ही हुआ था। जबकि, रोज गोल्ड काफी पुराना है पर बीच में यह आउट ऑफ फैशन हो गया था।

रोज गोल्ड और वाइट गोल्ड में कौन-सा है महंगा

व्हाइट गोल्ड और रोज गोल्ड के रंग के साथ ही इसकी कीमत में भी काफी अंतर है। हालांकि, इन दोनों के दाम इनके कारटेज (Caratage) पर निर्भर करता है। इन दोनों गोल्ड के दाम इस बात पर निर्भर करता है कि इन दोनों में कौन-से मेटल को मिलाया गया है। रोज गोल्ड में कॉपर मिलाया जाता है, जिसकी वजह से इसकी कीमत व्हाइट गोल्ड की तुलना में काफी कम रहती है। इसके बावजूद एक्सपर्ट रोज गोल्ड की जगह व्हाइट गोल्ड को काफी अच्छा ऑप्शन मानते हैं।

कौन-सा है बेहतर ऑप्शन

अब ऐसे में सवाल आता है कि इन दोनों में से आपके लिए कौन-सा बेहतर ऑप्शन है। इन दोनों की प्रॉपर्टी काफी अलग है। ऐसे में आपको सभी फैक्टर्स को ध्यान में रखकर इसे खरीदना चाहिए। हमन आपको ऊपर इमेज में रोज गोल्ड और व्हाइट गोल्ड के फैक्टर्स के बारे में बताया है। इन सभी फैक्टर्स को ध्यान में रखने के बाद ही इसे खरीदें।

लगातार तीसरे दिन गिरा बाजार, सेंसेक्स 158 अंक लुढ़कर हुआ बंद

शेयर बाजार के दोनों सूचकांक आज गिरावट के साथ बंद हुआ। शुरुआती कारोबार में बाजार हल्की बढ़त के साथ खुला था। विदेशी निवेशकों द्वारा हो रही निकासी और ऑटो-फार्मा में हो रह मुनाफावसूली के कारण भी बाजार में गिरावट आई। आज बजाज फाइनेंस के शेयर बाजार के टॉप गेनर रहे। आइए आज के कारोबारी सत्र में शेयर बाजार की चाल पर नजर डालते हैं।

नई दिल्ली। शेयर बाजार में जारी उतार-चढ़ाव के बीच आज लगातार तीसरे दिन मार्केट लाल निशान पर बंद हुआ। विदेशी पूंजी की लगातार निकासी के बीच ऑटो, फार्मा और कैपिटल गुड्स के शेयरों में मुनाफावसूली के कारण आज बाजार में गिरावट आई।

उतार-चढ़ाव भरे सत्र में सेंसेक्स 138.74 अंक या 0.17 फीसदी की गिरावट के साथ 80,081.98 अंक पर बंद हुआ।आज इंट्रा-डे में सेंसेक्स 80,000 अंक से नीचे गिरकर 79,891.68 के निचले स्तर पर पहुंच गया। वहीं, एनएसई निफ्टी 36.60 अंक या 0.15 फीसदी गिरकर 24,435.50 अंक पर बंद हुआ।

आज के टॉप गेनर और लूजर स्टॉक

आज सेंसेक्स में महिंद्रा एंड महिंद्रा, सन फार्मा, पावर ग्रिड, एनटीपीसी, अदानी पोर्ट्स, लार्सन एंड टुब्रो, आईसीआईसीआई बैंक और टाइटन के शेयर गिरावट के साथ बंद हुए। बजाज फाइनेंस के शेयर आज के टॉप गेनर रहे। इनके साथ टेक महिंद्रा, टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज, एचडीएफसी बैंक, एचसीएल टेक्नोलॉजीज और बजाज फिनसर्व के शेयर तेजी के साथ कारोबार कर रहे हैं।

धीमी कमाई और एफआईआई की तीखी प्रतिक्रिया से निवेशकों की मानसिकता निराशाजनक हो गई, जिससे बाजार की धारणा प्रभावित हुई। हालांकि, हालिया गिरावट के बाद मिड और स्मॉल-कैप सौदेबाजी का अनुभव कर रहे हैं, हालांकि इस गति-संचालित खरीदारी की स्थिरता अनिश्चित बनी हुई है अमेरिका में 10-वर्षीय उपज में वृद्धि हुई है, जो फेड द्वारा दर में कटौती की धीमी गति का संकेत है, जो उभरते बाजारों के प्रति जोखिम-मुक्त भावना के लिए तैयार है।

एशियाई बाजारों में, सियोल, शंघाई और हांगकांग ऊंचे स्तर पर बंद हुए जबकि टोक्यो निचले स्तर पर बंद हुआ। यूरोपीय बाजार मिश्रित रुख पर कारोबार कर रहे थे। मंगलवार को अमेरिकी बाजार सपाट बंद हुए। वैश्विक तेल बेंचमार्क ब्रेंट क्रूड 0.97 प्रतिशत गिरकर 75.30 अमेरिकी डॉलर प्रति बैरल पर आ गया।

एक्सचेंज डेटा के मुताबिक, विदेशी संस्थागत निवेशकों (एफआईआई) ने मंगलवार को 3,978.61 करोड़ रुपये के शेयर बेचे, जबकि घरेलू संस्थागत निवेशकों (डीआईआई) ने 5,869.06 करोड़ रुपये की इक्विटी खरीदी।

सपाट बंद हुआ रुपया

आज के कारोबारी सत्र में रुपया सीमित दायरे में कारोबार कर रहा था। इंटरबैंक विदेशी मुद्रा बाजार में भारतीय करेंसी ग्रीनबैक के मुकाबले 84.07 पर खुली और पूरे सत्र में एक सीमित दायरे में कारोबार किया। अंततः डॉलर के मुकाबले रुपया पिछले सत्र के समापन स्तर 84.08 (अनंतिम) पर बंद हुई। मंगलवार को अमेरिकी डॉलर के मुकाबले रुपया 1 पैसे की गिरावट के साथ 84.08 पर बंद हुआ था।

पर्यावरण पाठशाला: ये दिवाली भारत वाली

अंकुर

दिवाली का त्यौहार हर साल खुशियों और रोशनी का संदेश लेकर आता है। घरों में सजावट, पटाखों की आवाज़ और मिठाइयों का स्वाद इस पर्व को विशेष बनाता है। लेकिन बदलते समय और बढ़ते प्रदूषण को देखते हुए, हमें दिवाली को एक नई दिशा में ले जाने की आवश्यकता है, ताकि यह त्यौहार पर्यावरण के प्रति हमारी ज़िम्मेदारी को भी दर्शाए। पर्यावरण पाठशाला के माध्यम से हम इस दिवाली को एक स्थायी शैली में मनाने के लिए कुछ महत्वपूर्ण सुझाव लेकर आए हैं।

1. दीपों की रोशनी, पटाखों से दूरी

दिवाली पर पटाखे जलाने की परंपरा ने वायु और ध्वनि प्रदूषण को बढ़ावा दिया है। इसके बजाय, इस बार मिट्टी के दीयों का इस्तेमाल करें जो न केवल प्रदूषण को कम करते हैं, बल्कि भारतीय हस्तशिल्प को भी समर्थन देते हैं। तेल के दीये जलाने से न केवल आपके घर में रोशनी होगी, बल्कि यह वातावरण में सकारात्मक ऊर्जा भी फैलाएंगे।

2. प्राकृतिक रंगों से रंगोली बनाएं

रंगोली दिवाली का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, लेकिन रासायनिक रंगों का उपयोग हमारे पर्यावरण के लिए हानिकारक हो सकता है। प्राकृतिक रंग जैसे हल्दी, चावल का आटा, लाल मिट्टी, और फूलों की पंखुड़ियों का उपयोग करके रंगोली बनाएं, जिससे न केवल सुंदरता बढ़ेगी, बल्कि यह पूरी तरह से पर्यावरण के अनुकूल भी होगा।

3. स्थानीय उत्पादों और हस्तशिल्प को दें बढ़ावा

दिवाली की खरीदारी करते समय, स्थानीय बाजारों से हस्तशिल्प, मिट्टी के दीये, बांस की टोकरी और कपड़े की थैलियों का चयन करें। इससे न केवल स्थानीय कारीगरों को समर्थन मिलेगा, बल्कि यह पर्यावरणीय दृष्टिकोण से भी सही होगा, क्योंकि यह प्लास्टिक और अन्य हानिकारक सामग्रियों के उपयोग को कम करेगा।

4. इको-फ्रेंडली गिफ्टिंग

तोहफे देना दिवाली की एक खास परंपरा है। इस बार इको-फ्रेंडली गिफ्ट जैसे पौधे, जैविक उत्पाद, और हस्तनिर्मित वस्त्र दें। इससे न केवल उपहार पाने वाले को खुशी मिलेगी, बल्कि यह पर्यावरण संरक्षण में भी आपका योगदान होगा।

5. अपशिष्ट प्रबंधन पर दें ध्यान

दिवाली के दौरान बहुत सारा कचरा उत्पन्न होता है। कचरे को अलग-अलग वर्गों में विभाजित करके सही तरीके से निपटान करना चाहिए। जैविक कचरे का कंपोस्ट बनाएं और रीसायकल योग्य कचरे को पुनः चक्रित करने के लिए भेजें। यह छोटे कदम हमारे पर्यावरण को बेहतर बनाने में बड़ी भूमिका निभा सकते हैं।

6. सामूहिक उत्सव की परंपरा को पुनर्जीवित करें

सामूहिक उत्सव का आयोजन करने से न केवल ऊर्जा की बचत होगी, बल्कि यह समुदाय में आपसी प्रेम और भाईचारे को भी बढ़ावा देगा। एक साथ दीये जलाएं, पर्यावरण के अनुकूल रंगोली प्रतियोगिता का आयोजन करें, और प्रदूषण मुक्त दिवाली का संदेश फैलाएं।

7. सोशल मीडिया का इस्तेमाल कर जागरूकता फैलाएं

दिवाली के दौरान सोशल मीडिया का उपयोग करके पर्यावरण संरक्षण का संदेश फैलाएं। अपने दोस्तों और परिवार के साथ इको-फ्रेंडली दिवाली मनाने के अनुभव साझा करें और उन्हें भी प्रेरित करें।

इस दिवाली, हम सब मिलकर पर्यावरण पाठशाला की इस पहल के माध्यम से एक नई शुरुआत करें। प्रकृति के प्रति अपनी ज़िम्मेदारी को समझें और त्यौहार की खुशी के साथ-साथ धरती को भी संजोएं। दिवाली का यह पर्व हमारे जीवन में प्रकाश और सुख-समृद्धि लाए, लेकिन इस बार हम इसे और अधिक स्थायी और अर्थपूर्ण बनाएं।

"आओ, इस दिवाली को प्रकृति के साथ मिलकर मनाएं और एक नई रोशनी की दिशा में कदम बढ़ाएं।"

ये दिवाली भारत वाली

indiangreenbuddy@gmail.com

गांदरबल और पीड़ति

गांदरबल की धरती हुई लाल,
पीड़ति परिवार हो गए बेहाल।
सिर्फ एक डॉक्टर छह मजदूर,
इनकी जिंदगी हो गई काफूर।
अब परिवार का कौन रखवाला?
इनकी जिंदगी हो गई धर्मशाला।

गांदरबल की धरती हुई लाल,
पीड़ित परिवार हो गए बेहाल।
मासूमों के सर से उठ गया साया,
इन मास्टर माइंडो ने क्या पाया?
उन बेगुनाहों का खून ही बहाया,
देश ने तो इन लालों को गँवाया।

गांदरबल की धरती हुई लाल,
पीड़ित परिवार हो गए बेहाल।
अब एक्शन में आओ सरकार,
पीड़ित भी अब मांग रहे इंसाफ़।
करों इनके आँसूओं का हिसाब,
नेस्तनाबूत कर मिला दो खाक!
हो जाए अब आतंक राख-राख।

संजय एम. तराणेकर
(कवि, लेखक व समीक्षक)
इंदौर (मध्यप्रदेश)

विधानसभा चुनाव पूर्व आज सरायकेला में 7 लाख रुपए बरामद

(कार्तिक परिच्छा)

सरायकेला , आदर्श आचार संहिता लगने के साथ विधानसभा चुनाव को लेकर झारखंड सरगर्मी तेज हो गयी है । पूर्व मुख्यमंत्री चंपाई सोरेन , अर्जुन मुंडा का गढ होने के कारण इस जिला खास मायने रखता है ।ईचागढ़ विधानसभा क्षेत्र से जहां नगद दो लाख रूपए बरामद हुए वहीं खरसावां विधानसभा क्षेत्र अन्तर्गत आमदा चैकपोस्ट में पांच लाख बाईस हजार पांच सौ रूपये बुधवार को बरामद हुए है । सरायके खरसावां एस पी मुकेश लुनायत ने घटना स्थल पर पहुंचकर जानकारी ली तथा वहां तैनात मजिस्ट्रेट अश्वनी हेंब्रम से लिखित लेकर सरायकेला थाने में मामले को ले आये । बताया जाता है कि संबंधित रूपये किसी बीमा कंपनी के एजेंट से मिली है । आगे की कारवाई जारी है

दूसरी घटना आज सुबह की है । सुबह चांडिल और जमशेदपुर की सीमा पर चांडिल थाना क्षेत्र के डोबो में लगाए गए चेकनाका पर जांच टीम को सफलता मिली है. टीम ने जमशेदपुर से रांची जा रहे एक कार से नकद दो लाख रुपये जब्त किये हैं. कार सवार ने जांच टीम को बताया कि रुपये निजी जरूरत के हैं और रांची एडमिशन के लिए ले जा रहा है. लेकिन रुपये से संबंधित किसी प्रकार का पुख्ता सबूत नहीं दिखा पाने के कारण टीम ने रुपये जब्त कर इसकी सूचना संबंधित पदाधिकारी को दे दी है. डोबो चेकनाका पर दंडाधिकारी के साथ पुलिस टीम 24 घंटे आने-जाने वालों की जांच कर रही है।

इन्दौर के फिल्म वितरक व फिल्मों को समर्पित जिंदादिल इन्सान ओ पी गोयल साहब का यू चला जाना दुखत.....।

हरिहर सिंह चौहान इन्दौर

इन्दौर में फिल्मों को समर्पित एक जिंदादिल इंसान जो हर एक व्यक्ति को उनके नाम से व्यक्तिगत रूप से जनाते थे ।एक अच्छे व सच्चे समाजसेवी व इन्दौर के फिल्म वितरक आदरणीय श्री ओ पी गोयल जी के निधन की खबर से दिल बहुत दुःखी हैं।फिल्मों से ज़िन्दगी को निखारने वाले अपने आप को समर्पित करने वाले फिल्म वितरक जो निदेशक निर्माता कलाकारों के साथ सीधा सम्पर्क रखते थे। वह हर समय जीतें जगाते प्रतिनिधित्व करते थे। ओमप्रकाश गोयल (ओ पी गोयल) ने अपना प्रभाव मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, राजस्थान , सेन्ट्रल सिने सर्किट में भी अपना एक अलग मुकाम मनाया था। इन्दौर में फ़िल्मी कलाकार आये उनसे मुलाकात करना हो तो यहां उन कलाकारों के लिए हर एक से मेलजोल व वार्तालाप करने में कुछ ही नाम थे जैसे श्री सन्तोष सिंग जैन साहब, जो मुंबई मे बेठकर पूरा आधार बैस तैयार कर देते थे वहीं श्री जयप्रकाश चौकसे जी जो राज कपूर परिवार अनिल कुमार व अन्य सभी वरिष्ठ कलाकारों के करीबी माने जाते रहे और उसी कड़ी में इन्दौर के ओ पी गोयल साहब ही प्रमुख हुआ करते थे जब फिल्मों का अपना वर्चस्व कायम था। गोयल साहब सबसे पुराने फिल्म वितरक भी थे फिल्म कालोनी इन्दौर में उनके आफिस में सुबह से शाम तक मिलने वाले लोगों व फिल्म से जुड़े व्यक्तियों की लाईन लगी रहती थी। एक समय था जब इन्दौर की फिल्म कालोनी व धेनू मार्किट में फिल्म वितरकों के ढ़ेर सारे आफिस हुआ करतें थे । यह तक नामी गिरामी कलाकारों जो डिस्ट्रुब्यूटर भी थे उनके भी आफिस हुआ करतें थे जैसे बोनी कपूर परिवार के सुभाष घई जी के

प्रकाश झा का जैकी श्राफ का आफिस भी धेनू मार्किट में हुआ करता था। ओ पी गोयल साहब के आफिस में फिल्मों से जुड़ी बुकलेट किताबें और पूरे भारत में रिलिज़ फिल्म की सटिक जानकारी सबसे पहले मुंबई व अन्य महानगरों से उन्हीं के पास आती थी। समाजसेवा के क्षेत्र में गोयल साहब कभी पीछे नहीं रहे । उनके बारे में उज्जैन निवासी उनके फिल्म वितरक साथी छोटे भाई माडर्न फिल्म के प्रमोद अग्रवाल जी ने बताया आदरणीय ओ पी गोयल सा,आज हमारे बीच नहीं हैं ।जिन्हें मैं खुद एक मसीहा के रूप में देख चुका हूं,मदद करने में उनका कोई भी सानी नही था । जब भी कोई निर्माता,निर्देशक, प्रदर्शक किसी भी मामले को लेकर छोटे वितरक को उलझा देता था तो आदरणीय गोयल साहब उनके आगे ढाल बनकर खड़े हो जाते थे। छोटे छोटे निर्माता जिनकी फिल्म 5/10 लाख के लिए रुक जाती थी उन फिल्मों को उन्होंने पूरी कराई ।कितने ही विवाद हो वे जहां खड़े हो जाते अपने आप सुलझने लगते थे । मैं,स्वयं कितनी ही फ़िल्मों के सेट पर उनके साथ गया। केवल उलझन को कैसे भी सुलझाना उनका कर्तव्य था। फिल्म निर्माता जवाहरलाल बाफना,कांति शाह, गोविंदा,धर्मेंद्र जी , मिथुन चक्रवर्ती से उनके पारिवारिक संबंध थे। हमारी फिल्म संस्था सेंट्रल सर्किट सिने एसोसिएशन इन्दौर के लिए जो अविस्मरणीय कार्य किए। जिन्हें कभी भुलाया नहीं जा सकता। मेने स्वयं उनका वह दौर देखा था जब देश के प्रसिद्ध गीतकार संगीतकार गायक दादू रविन्द्र जैन साहब से वह की वर्षों से जुड़े रहे । इन्दौर में यह मध्यप्रदेश में कहीं पर रविन्द्र जैन साहब को लाना हो तो सब से पहले ओ पी गोयल साहब की ही याद आती थी । दादू के प्रति उसका भी मन समर्पित रहा। राम जन्मभूमि आंदोलन के समय दादू रविन्द्र जैन के भक्ति गीत ने आंदोलन को बहुत प्रभावित किया था उस समय सबसे ज्यादा साध्वी ऋतुम्भरा रविन्द्र जैन एक शाम राम के नाम यह करना हो तो उस कार्यक्रम में गोयल साहब के सहयोग से पूरा नहीं होता था। रविन्द्र जैन जी के निधन के बाद उनकी याद में रविन्द्र जैन संगीत कला एकेडमी की शुरुआत एम टी एच काम्पाउड स्थिति पलिका प्लाजा में गोयल साहब द्वारा की गई थी। वह हर साल उनकी याद में एक शाम रविन्द्र जैन के नाम करते थे युवा कलाकारों का सम्मान भी करते थे। फिल्मों की दुनिया के इर्द-गिर्द व समाज सेवा करते थे उन्हीं की इस कड़ी को ओ पी गोयल साहब के सुपुत्र आशीष गोयल आप की नेक काम परोपकार समाजिक जिम्मेदारी को वह भी अभी निभा रहे हैं। आशीष जी संस्था अग्र मंच के संस्थापक बन कर अपने पिता जी का नाम रोशन कर रहे हैं। आदरणीय ओ पी गोयल साहब के निधन पर हम सभी उनके चाहने वाले उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।आप को परमपिता परमात्मा अपने श्री चरणों में स्थान दें यही भाव के साथ शत शत नमन।

घर खरीदारों का RERA से उठा भरोसा

रियल एस्टेट (रेगुलेशन एंड डेवलपमेंट) एक्ट 2016 यानी रेरा को घर खरीदारों के हितों की रक्षा करने और प्रॉपर्टी सेक्टर में निवेश को बढ़ावा देने के लिए लाया गया था। लेकिन अब 8 साल बाद मामला घूम-फिरकर वहीं आ गया है। घर खरीदारों ने रेरा की भूमिका पर सवाल खड़े करते हुए उपभोक्ता मंत्रालय से अपने हितों की रक्षा के लिए नए दिशा-निर्देश जारी करने की मांग की है।

नईदिल्ली। रियलएस्टेट सेक्टर की निगरानी करने के लिए निर्मित कानून रेरा (RERA) ने उनका ही भरोसा खो दिया है, जिनके लिए उसका निर्माण किया गया था। घर खरीदारों ने रेरा की भूमिका पर सवाल खड़े करते हुए उपभोक्ता मंत्रालय से अपने तमाम हितों की रक्षा के लिए नए सिरे से दिशा-निर्देश जारी करने की मांग की है।

2016 में अस्तित्व में आए रेरा के पहले उपभोक्ता मंत्रालय पर ही घर खरीदारों के हितों और अधिकारों की रक्षा का दायित्व था। यानी आठ साल बाद वहीं पहुंच गए जहां से चले थे।

रेरा से क्या शिकायत है?

घर खरीदारों के सबसे बड़े संगठन फोर फार पीपल्स कलेक्टिव एफर्ट (एफपीसीई) ने उपभोक्ता मंत्रालय को लिखी चिट्ठी में घर खरीदारों की परेशानियां तो गिनाई ही है, यह भी कहा है कि वैसे तो ये सभी दिक्कतें रेरा के अधीन आती हैं, लेकिन दुख की बात है कि यह अपनी सक्रियता के सात वर्षों में अपेक्षित उद्देश्य पूरा नहीं कर सका है।

फोरम ने याद दिलाया है कि सुप्रीम कोर्ट ने हाल में रियल इस्टेट से जुड़े एक मामले की सुनवाई करते हुए यह टिप्पणी की है कि हम रेरा को लेकर कोई बात नहीं करना चाहते हैं, क्योंकि यह सेवानिवृत अफसरों के लिए पुनर्वास केंद्र बन गया है। इन पूर्व अधिकारियों ने इस कानून के पूरे सिस्टम में हताशा-निराशा भर दी है।

खास बात यह है कि फोरम के अध्यक्ष अभय उपाध्याय रेरा की केंद्रीय सलाहकार परिषद के सदस्य भी हैं। अभय उपाध्याय ने कहा कि रियल इस्टेट सेक्टर के उपभोक्ताओं के हित किसी भी अन्य क्षेत्र के उपभोक्ता के मुकाबले कहीं अधिक हैं। इसलिए हमने उपभोक्ता मंत्रालय से मांग की है कि वे हमारे हितों की रक्षा करें। मंत्रालय से हमने मांग की है कि वह हमें धोखाधड़ी से बचाने के लिए स्पष्ट दिशा-निर्देश जारी करे।

फोरम ने उठाए तीन मुद्दे

अभय उपाध्याय ने कहा कि उपभोक्ता मंत्रालय के पास जो मामले जाते हैं, उनमें दस प्रतिशत रियल इस्टेट सेक्टर से जुड़े होते हैं। इनमें जो पैसा लगा है, वह बहुत बड़ी धनराशि है, क्योंकि भवन-भूखंडों की कीमत अन्य उत्पादों के मुकाबले कहीं अधिक होती है। फोरम ने अपने पत्र में मुख्य रूप से तीन मुद्दे उठाए हैं।

चक्रवात "दाना" के कारण देश मे 221 ट्रेनें रद्द कर दी गई हैं

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भुबनेश्वर: चक्रवात "दाना" के कारण देश के विभिन्न हिस्सों में चलने वाली 221 ट्रेनें रद्द कर दी गई हैं, रेलवे विभाग ने मंगलवार को जानकारी दी है कि ये सभी ट्रेनें 23, 24, 25 और 26 तारीख को भुवनेश्वर, रुशिकेश-पुरी हैं , नई दिल्ली-पुरी, कोलकाता-पुरी, सिलचर-सिकंदराबाद, सिकंदराबाद-भुवनेश्वर, डिब्रूगढ़-कंचकुमारी, चेन्नई सेंट्रल-हावड़ा, पुडुचेरी-हावड़ा ट्रेनें।इसी तरह, 24 को सलीमार-पुरी, हावड़ा-भुवनेश्वर, हावड़ा-पुरी, पटना-पुरी, सलीमार-पुरी, भंजपुर-पुरी, आनंदबिहार-पुरी, हावड़ा-भद्रक, बालासोर-भद्रक, खड़गपुर-भद्रक, भद्रक-कटक, 25 को भद्रक- 27 तारीख को पलासा, जलेश्वर-पुरी, बंगीरिपोशी-पुरी, खड़गपुर खुर्दा रोड, दीघा-विशाखापटना, ब्रह्मपुर-विशाखापटना, अहमदाबाद-पुरी, पुरी-गांधीधाम, निजामुद्दीन-पुरी, जयनगर-पुरी और रामेश्वरम से भुवनेश्वर जाने वाली ट्रेनें रद्द कर दी गई हैं।

तूफ़ान 'दाना' आ रहा है

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भुबनेस्वर: ओड़िशा के तट पर चक्रवात 'दाना' है। वह समुद्र से ताकत लेकर आगे बढ़ रहा है। तूफान के असर से तटीय इलाकों में बारिश शुरू हो गई है। पारादीप, राजनगर और धामरा इलाकों में बारिश और हवा चल रही है।दूसरी ओर, चक्रवात 'दाना' का बाहरी घेरा जमीन को छू चुका है। तूफान का बाहरी घेरा भद्रक और केंद्रपाड़ा जिलों के कुछ इलाकों को छू गया है।आईएमडी के महानिदेशक डॉ. मृत्युजय महापात्र ने कहा, यह बंगाल की खाड़ी में उत्तर-पश्चिम की ओर बढ़ रहा है।

उन्होंने कहा, तूफान कल रात से 25 दिसंबर की सुबह के बीच तट को पार कर जाएगा. तट पार करते समय हवा की गति 100 से 120 किमी/घंटा होने की संभावना है। यह आंतरिक परतों के बीच की भूमि को पार करेगा। उससे पहले ओडिशा तट के पास हल्की बारिश शुरू हो गई है। आज एक-दो स्थानों पर हल्की से मध्यम वर्षा होगी। मौसम विभाग का अनुमान है कि शाम को कुछ जगहों पर भारी से बहुत भारी और कुछ जगहों पर भारी बारिश होगी।

आईएमडी महानिदेशक, कल कुछ स्थानों पर 20 सेमी से अधिक वर्षा होगी। कुछ स्थानों पर, हवा पेड़ों को उखाड़ सकती है और शाखाएँ तोड़ सकती है। तूफान के असर से केंद्रपाड़ा, भद्रक और बालासोर में 1-2 मीटर ऊंचा ज्वार उठ सकता है।तूफान से केंद्रपाड़ा, बालासोर, जगतसिंहपुर और भद्रक जिले सबसे ज्यादा प्रभावित हो सकते हैं। आईएमडी महानिदेशक ने कहा, इसी तरह, पश्चिम मेदिनीपुर जिला तूफान से अधिक प्रभावित होगा।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095 . newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी .आर .बी . एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023